आज़ादी का अमृत महोत्सव

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

राजभाषा रश्मि

अक्टूबर- मार्च, 2024



भा.क.नि.
CCI

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
वस्त्र मंत्रालय

THE COTTON CORPORATION OF INDIA LIMITED

A Mini Ratna Company
(GOVERNMENT OF INDIA UNDERTAKING)
MINISTRY OF TEXTILES

राजभाषा रश्मि

संरक्षक



श्री ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादक मंडल



श्री विजय कुरडगि
निदेशक (विपणन)



श्री एस. के. पाणिग्राही
मुख्य महा प्रबंधक (विपणन)



श्री राजेन्द्र कुमार गुप्ता
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/प्रशासन/राजभाषा)



श्री तिलक राज तनेजा
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त)

राजभाषा रश्मि

अक्टूबर-मार्च - 2024

अनुक्रमणिका

1. अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 01
2. संपादकीय 02
3. हिंदी निरीक्षण 03
4. मुख्यालय में आयोजित गतिविधियों की झांकियां 06
5. सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2023 07
6. भारत के आर्थिक विकास में प्रवासी भारतीयों का योगदान 09
7. भारत कल आज और कल 14
8. प्रेमचंद और समाजवाद 18
9. डॉ. भगवती चरण वर्मा के 'अपने खिलौने' 22
10. राष्ट्र के विकास में पर्यटन का महत्व 26
11. आत्मविश्वास 33
12. मजदूर दिवस पर गीत 35
13. तनख्वाह 36
14. यादें 37
15. शब्द संसार 38
16. सेवानिवृत्ति 39
17. राष्ट्रीय एकता तथा विश्व बंधुत्व का संदेश 40

रचना के तथ्यों का दायित्व स्वयं रचनाकार का है।

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से ....



राजभाषा रश्मि के इस अंक में आप सबका हार्दिक स्वागत है । किसी भी देश की सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक प्रगति में उस देश की भाषा का अहम योगदान होता है । भाषा या बोली सिर्फ विचारों की वाहिका ही नहीं, अपितु राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता व संस्कारों के निर्माण का महत्वपूर्ण साधन भी होती है । भाषा किसी भी देश की विशिष्ट पहचान होती है और देश की मौलिक सोच, सरकारी कामकाज और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ अपनी भाषा में की जा सकती है ।

आप सभी जानते है कि आज व्यापार जगत परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है । इस बदलते माहौल में सभी अपने उत्पादों के विपणन पर अधिक जोर दे रहे है । विपणन के इस क्षेत्र में क्षेत्रीय तथा हिंदी भाषा की एक अहम भूमिका होती है । व्यावसायिक क्षेत्र में हिंदी की प्रगामी दूरगामी व्यापकता को सब स्वीकार चुके है । निजी कंपनियां भी बिक्री बढ़ाने के लिए अपने उत्पादों के विज्ञापन हिंदी में देते है ।

भारतीय कपास निगम भाषा के इस महत्व को पहले ही स्वीकार कर चुका है। यही कारण है कि किसानों के लाभ के लिए आयोजित किसान मेले, अन्य गतिविधियां, कपास से संबंधित सूचनाएं हिंदी अथवा क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध करायी जाती है।

निगम ने राजभाषा रश्मि के माध्यम से किसानों को अपनी भाषा में खेती के तकनीकी ज्ञान के साथ-साथ अपने कामकाज को जोड़ा है और अपना हर संदेश हिंदी के माध्यम से पहुंचाने का प्रयास किया है । राजभाषा हिंदी को समृद्ध, व्यापक और लोकप्रिय बनाने के लिए आप सबका सहयोग वांछनीय है ।

शुभकामनाओं सहित

ललित गुप्ता

ललित कुमार गुप्ता
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संपादकीय



निगम की राजभाषा छःमाही पत्रिका राजभाषा रश्मि का अक्टूबर – मार्च 2024 अंक आपको सौंपते हुए हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति केवल अपनी भाषा में ही संभव है। अपनी भाषा के प्रति प्रेम हमारे राष्ट्रप्रेम को भी मजबूत बनाता है। अपनी भाषा में मौलिक लेखन से अभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वभाविक होती है और ऐसा अनुवादित भाषा के माध्यम से संभव नही है। राजभाषा हिंदी, सरकार और जनता के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है।

हिंदी प्रांरभ से ही भारत देश की सबसे सरल और सक्षम संपर्क भाषा रही है प्रशासन की भाषा कामकाजी और प्रयोजन मूलक होने के साथ- साथ सहज, सरल, सुबोध और जनता की भाषा बनी रही। इस प्रकार से विकसित हिंदी सरकारी कामकाज के रूप में ही नहीं, बल्कि जनसंपर्क और राष्ट्रीय संपर्क की भाषा के रूप में भी एक सशक्त कड़ी का काम कर रही है। किसी भी राष्ट्र के समग्र विकास में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुई प्रगति का विशेष स्थान होता है। भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी राष्ट्र रहा है।

राजभाषा रश्मि को और अधिक उत्कृष्ट बनाने के लिए निगम के अधिकारियों और कर्मचारियों के अतिरिक्त विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों तकनीकी एवं उत्कृष्ट लेख, कहानी व कविताओं का हमें इंतजार रहेगा।

राजेन्द्र कुमार गुप्ता
मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/राजभाषा)

राजभाषा निरीक्षण

शाखा कार्यालय गुंटूर

शाखा कार्यालय गुंटूर में श्री राजेंद्र कुमार गुप्ता, मुख्य महा प्रबंधक (वित्त / राजभाषा) द्वारा दिनांक 30.10.2023 का राजभाषा का निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान राजभाषा हिंदी का कार्य सराहनीय पाया गया।



(श्री राजेंद्र कुमार गुप्ता मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/राजभाषा) द्वारा शाखा कार्यालय गुंटूर में राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए साथ में शाखा प्रधान श्री स्वप्निल दडमल)

शाखा कार्यालय सिरसा

शाखा कार्यालय सिरसा में श्री विजय कुराडगी निदेशक (विपणन) द्वारा दिनांक 11.12.2023 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी का कार्य सराहनीय पाया गया।



(श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा शाखा कार्यालय सिरसा का राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए साथ में शाखा प्रधान ब्रिजेश कसाना और श्रीमती सौमा बजाज)

शाखा कार्यालय अकोला

दिनांक 12.12.2023 को श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा शाखा कार्यालय अकोला का राजभाषा का निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी का कार्य काफी सराहनीय पाया गया।



(श्री ललित कुमार गुप्ता , अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा
शाखा कार्यालय अकोला का राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए)

शाखा कार्यालय औरंगाबाद

दिनांक 13.12.2023 को श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा शाखा कार्यालय औरंगाबाद में राजभाषा में हो रहे हिंदी कार्य का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी कार्य उत्कृष्ट पाया गया।



(श्री ललित कुमार गुप्ता , अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा शाखा कार्यालय औरंगाबाद
का राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए साथ में श्री अमरनाथ रेड्डी, महाप्रबंधक)

शाखा कार्यालय वारंगल

शाखा कार्यालय वारंगल में श्री ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा दिनांक 21.12.2023 को राजभाषा निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान शाखा का राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य संतोषजनक पाया गया।



(श्री ललित कुमार गुप्ता , अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय द्वारा शाखा कार्यालय वारंगल का राजभाषा हिंदी का निरीक्षण करते हुए साथ में श्री अर्जुन दवे, महा प्रबंधक और हिंदी सहाय्यक श्री नीरज वर्मा)

शाखा कार्यालय कोलकाता

दिनांक 12.12.2023 को श्री विजय कुराडगी निदेशक (विपणन) द्वारा शाखा कार्यालय कोलकाता राजभाषा का निरीक्षण किया गया । निरीक्षण के दौरान शाखा का हिंदी का कार्य काफी सराहनीय पाया गया।

शाखा कार्यालय वारंगल

शाखा कार्यालय वारंगल में श्री विजय कुराडगी निदेशक (विपणन) द्वारा दिनांक 30.10.2023 को राजभाषा का निरीक्षण किया गया । इस निरीक्षण के दौरान शाखा का राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य संतोषजनक पाया गया।

मुख्यालय में आयोजित गतिविधियों की झांकियां

स्वच्छता पखवाड़ा

वस्त्र मंत्रालय के दिशानिर्देशानुसार निगम के मुख्यालय में दिनांक 01 मार्च 2024 से 15 मार्च 2024 स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया । जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं और गतिविधियों का भी आयोजन किया गया जैसे - शपथ समारोह, श्रमदान अभियान, संगोष्ठी, निबंध प्रतियोगिता, स्लोगन प्रतियोगिता, कपास भवन बस स्टॉप से सीबीडी बेलापुर रेलवे स्टेशन तक साफ-सफाई, वृक्षारोपण, निगम के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा स्वच्छता संबंधी सभी गतिविधियों का निरीक्षण इत्यादि। सभी प्रतियोगिताओं और गतिविधियों में निगम के अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा बढ़-चढ़ कर भाग लिया गया ।



(वृक्षारोपण करते हुए माननीय अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय साथ में निदेशक (विपणन), मुख्य महा प्रबंधक (विपणन) एवं मुख्य महा प्रबंधक (वित्त/सू. प्रौ.)



(वृक्षारोपण में अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक के साथ अपनी सहभागिता देते निगम के अधिकारी व कर्मचारी)

सतर्कता जागरूकता सप्ताह - 2023

आज के दौर में भ्रष्टाचार एक प्रमुख समस्या है जो संगठनों के कार्यान्वयन को गंभीर रूप से प्रभावित करती है और समग्र रूप से राष्ट्र के विकास को बाधित करती है। हालांकि निरंतर सतर्कता पारदर्शिता को प्रोत्साहित करने, परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग और प्रक्रियाओं में व्यवस्थित परिवर्तनों के साथ इसे समाप्त किया जा सकता है। इसी उद्देश्य से भारतीय कपास निगम लिमिटेड एक भ्रष्टाचार - मुक्त और पारदर्शी वातावरण को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध है। केन्द्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार, निगम द्वारा प्रत्येक वर्ष सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है। इस वर्ष भी निगम के मुख्यालय और शाखा कार्यालयों में सतर्कता जागरूकता सप्ताह 30.10.2023 से 05.11.2023 तक **"भ्रष्टाचार का विरोध करें राष्ट्र के प्रति समर्पित रहें"** विषय के साथ मनाया गया । सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2023 के प्रारंभ में सी.बी.सी. के दिशा निर्देशों के साथ निगम में 16.08.2023 से 15.11.2023 तक तीन माह का अभियान चलाया गया, जिसमें निम्नलिखित निवारक सतर्कता कार्यक्रम शामिल थे।

1. पीआईडीपीआई (PIDPI) प्रस्ताव के बारे में जागरूकता निर्माण क्षमता निर्माण कार्यक्रम
2. प्रणालीगत सुधर उपायों की पहचान और कार्यान्वयन
3. शिकायत निपटान के लिए आई टी का उपयोग
4. परिपत्रों/दिशानिर्देशों / मैनुअलों का अद्यतन

मुख्य सतर्कता आयोग के मार्गदर्शन में, सतर्कता जागरूकता अभियान और सप्ताह को राष्ट्र व्यापी रूप से मनाया गया ताकि सभी हितधारकों को भ्रष्टाचार की रोकथाम और उसके खिलाफ लड़ाई में सामूहिक रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके और भ्रष्टाचार के अस्तित्व, कारणों और गंभीरता के बारे में और उसके द्वारा उत्पन्न खतरे के बारे में जन जागरूकता बढ़ाई जा सके। "भष्टाचार" शब्द कोई नया शब्द नहीं है बल्कि एक परिचित शब्द है जिस हम प्रतिदिन सामना करते हैं। भ्रष्टाचार एक वैश्विक महामारी है जो किसी न किसी रूप में समाज के सभी स्तरों को प्रभावित करती है। यह सामाजिक और आर्थिक विकास को अस्थिर करता है, केवल समाज की सामूहिक चेतना के साथ ही इसे समाज के उखाड़ा जा सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हर किसी को भ्रष्टाचार को उखाड़ फेकनें के प्रयासों के प्रति संवेदनशील और प्रेरित किया जाए।

द्वारा उत्पन्न खतरे के बारे में जन जागरूकता बढ़ाई जा सके। "भष्टाचार" शब्द कोई नया शब्द नहीं है बल्कि एक परिचित शब्द है जिसमें हम प्रतिदिन सामना करते हैं। भ्रष्टाचार एक वैश्विक महामारी है जो किसी न किसी रूप में समाज के सभी स्तरों को प्रभावित करती है। यह सामाजिक और आर्थिक विकास को अस्थिर करता है, केवल समाज की सामूहिक चेतना के साथ ही इसे समाज के उखाडा जा सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि हर किसी को भ्रष्टाचार को उखाड़ फेकनें के प्रयासों के प्रति संवेदनशील और प्रेरित किया जाए।

इस वर्ष सीवीसी (CVC) परिपत्र के अनुपालन में सतर्कता विभाग द्वारा पीआईडीपीआई (PIDPI) के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ की गयी इनमें ग्रामसभा, वाकथान, सेमिनार आदि जैसे जन समूह के बीच पीआईडीपीआई (PIDPI) के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए विभिन्न गतिविधियाँ शामिल थी। क्षमता निर्माण पर भी ध्यान केन्द्रित करने हेतु निगम में कार्यरत और प्रमुख अतिथि प्रशिक्षकों द्वारा उत्कृष्ट प्रशिक्षण सत्र भी शामिल थे । इसके अतिरिक्त BITS, आधार आधारित प्रमाणिकरण, KMS, और एक शिकायत पोर्टल जैसे सिस्टमात्मक सुधार लागू किये।

मुख्यालय तथा शाखा कार्यालयों द्वारा किये गए विभिन्न कार्यक्रमों की झलक



(वाकथन में अपनी सहभागिता देते हुऐ अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा अधिकारी और कर्मचारी गण)



(प्रतियोगिता में भाग लेते हुऐ प्रतिभागी)

भारत के आर्थिक विकास में प्रवासी भारतीयों का योगदान।

भारत विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है। प्राचीन भारत में तो इस का भौगोलिक विस्तार अफगानिस्तान से लेकर सुदूर दक्षिण में श्रीलंका और पूर्व में म्यंमार तक था। भारत के प्राचान भौगोलिक क्षेत्र के कारण इस क्षेत्र को भारतीय उपमहाद्वीप कहा जाता है। भारत में जनघनत्व भी बहुत अधिक है।आज भारत जनसंख्या के मामले में विश्व में सबसे आगे पहुँच चुका है। हजारों वर्षों से भारत का विश्व की विभिन्न सभ्यताओं से संपर्क रहा है। व्यापार-व्यवसाय सहित विभिन्न कारणों से यहाँ के लोगों का विदेशों में आवागमन होता रहा है।

यदि समग्र विश्व पर नजर डाली जाए तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि विश्व में सर्वाधिक प्रवासियों का देश अगर कोई है तो संभवतः वह है भारत ही है। सदियों से राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और सामाजिक कारणों से विश्व के विभिन्न देशों में भारतवासियों का पलायन होता रहा है, जो आज भी जारी है। सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को विश्व स्तर पर ले जाने के लिए प्रयास किए, जिसके कारण भारत से अनेक धर्म प्रचारक दक्षिण एशिया के विभिन्न देशों में पहुँचे। चीन, जापान, थाईलैंड, म्यंमार, और श्रीलंका आदि अनेक देशों में गए, और उनमें से अनेक वहाँ बस गए। पलायन में एक प्रमुख कारण था, भारतीय लोगों की कर्मठता। बड़े पैमाने पर भारत के लोगों के विदेशों में जाकर बसना 19वीं सदी में और 20वीं सदी के प्रारंभ में हुआ जब ब्रिटिश शासक अपने उपनिवेशों में विकास और वहाँ के प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए यहाँ से मजदूरों को ले कर गए। उस समय उन्हें विकास के लिए अनेक देशों में ऐसे मजदूरों की आवश्यकता थी जो कड़ी मेहनत से वहाँ विकास कार्य कर सकें। इसलिए अंग्रेज यहां के लोगों को एग्रीमेंट करके यहाँ के लोगों को मजदूर बनाकर बड़ी संख्या में विभिन्न देशों में लेकर गए। हिंदुस्तानी किसान मजदूर मॉरीशस में दिसंबर सन 1834 ई. में, त्रिनिडाड में 1845 ई. में, दक्षिण अफ्रीका में 1860 ईस्वी में, गयाना में 1827 ईस्वी में, सूरीनाम में 1873 ईस्वी में, फिजी में 1979 ईस्वी में और कीनिया में 1896 ईस्वी में पहुंचे और 1916 तक भारत से इनके जाने का सिलसिला चलता रहा। ये एक बार इन देशों में जा कर बसे तो फिर लौट कर आ न सके। एग्रीमेंट करके गए ये मजदूर आगे चलकर गिरमिटिया मजदूर कहलाए। ये गिरमिटिया मजदूर ही आगे चल कर भारतीय भाषा और धर्म-संस्कृति के प्रमुख विश्वदूत बने। इन्हें हम गिरमिटिया मजदूरों के रूप में जानते हैं। 19वीं सदी में प्रारंभ हुआ यह पलायन बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक चलता रहा। भारत की विभिन्न प्रांतों से मजदूर दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस फीजी, सूरीनाम, वेस्टइंडीज, केन्या आदि देशों में गए । इनमें सबसे बड़ी संख्या थी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के राज्यों के निवासियों की, जहाँ सर्वाधिक गरीबी और बेरोजगारी थी। हालांकि इनमें आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के निवासियों का भी अच्छी खासी संख्या है और अन्य राज्यों से भी लोग मजदूर बनकर इन देशों में गए।

बड़े पलायन का दूसरा मुख्य कारण था व्यवसाय। भारत से बड़ी संख्या में लोग व्यापार के लिए

विभिन्न देशों में पहुँचे। इसमें गुजरात के लोग दक्षिण अफ्रीका और यूरोप के देशों में व्यापार के लिए गए और उन्होंने वहाँ पर अपना अच्छा खासा व्यापार स्थापित किया। इसके अतिरिक्त मलेशिया, जावा - सुमात्रा सहित इंडोनेशिया, म्यंमार, आदि में भी व्यापार के लिए बड़ी संख्या में भारतवासी पहुंचे, जिनमें से अनेक वहीं बस गए। भारत से जाकर विभिन्न देशों में बसे लोगों की जनसंख्या तीन करोड़ से अधिक है, जिससे एक बड़ा देश बन सकता है। राष्ट्रपिता मोहन दास कर्मचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका में बसे एक गुजराती व्यापारी के कार्य के लिए ही बैरिस्टर बनकर दक्षिण अफ्रीका गए थे।

आप दुनिया के किसी भी कोने में चले जाएँ तो वहां आपको भारतीय मिल जाएँगे। दूसरे देशों में सबसे ज्यादा प्रवासियों की संख्या के मामले में अब भारत पहले पायदान पर पहुंच गया है। स्वतंत्रता के पश्चात भारत से बड़ी संख्या में लोग यूरोप और अमेरिका की तरफ वहाँ के अच्छे जीवन स्तर के कारण आकर्षित हुए और वहां पर रोजगार के लिए पहुंचने लगे। जिसके चलते इनमें इंग्लैंड, अमेरिका सहित विभिन्न यूरोपीय देशों में भारतीयों की अच्छी खासी संख्या है। कनाडा में जहाँ एक और पंजाबियों, विशेषकर सिखों का वर्चस्व है, वही दक्षिण भारत से गए लोगों की भी खासी आबादी है। मलेशिया और इंडोनेशिया में भी बड़ी संख्या में दक्षिणी राज्यों के लोग पहुंचे हैं। इसी प्रकार आर्थिक संपन्नता के चलते खाड़ी के देशों में भी बड़ी संख्या में लोग वहां पहुंचे हैं इनमें सबसे बड़ी संख्या है केरलवासियों की ।

संयुक्त राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक मामलों के जनसंख्या विभाग द्वारा जारी की गई इंटरनेशनल माइग्रेशन 2020 की रिपोर्ट के अनुसार भारत के प्रवासियों की संख्या दुनिया में सबसे ज्यादा है, जो विभिन्न देशों में फैले हुए है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार 2020 में देश से बाहर रहने वालों की संख्या 18 मिलियन यानी कि करीब एक करोड़ 80 लाख है यह प्रवासियों के मामले में सबसे बड़ी संख्या है। भारत के सबसे ज्यादा लोग यूनाइटेड अरब अमीरात, अमेरिका और सऊदी अरब में रहते हैं। संयुक्त अरब अमीरात में पैंतीस लाख, अमेरिका में 27 लाख, सऊदी अरब में 25 लाख, और इसके अलावा ऑस्ट्रेलिया कनाडा, कुवैत, ओमान, कतर और इंग्लैंड जैसे देशों में भारतीय मूल के लोग बड़ी संख्या में रहते हैं। 2020 में भारत के करीब एक करोड़ 80 लाख लोग देश से बाहर रह रहे थे।

पिछले कई दशकों से भारतवासियों में विदेश जाकर पढ़ने और वहीं नौकरी करने का चलन तेजी से बढ़ा है। भारत से हर साल लाखों युवा यूरोप के देशों के अतिरिक्त अमेरिका, कनाडा ऑस्ट्रेलिया आदि देशों में पढ़ने के लिए जाते हैं और उनमें से ज्यादातर वहीं बस जाते हैं। आई. टी. के क्षेत्र में भारतीय युवाओं के रुझान और कार्यकुशलता के चलते अमेरिका की बड़ी-बड़ी आईटी कंपनियों ने भारतीय युवाओं को अपने यहां रोजगार दिया। इसके चलते भारतीय युवाओं की बहुत बड़ी आबादी अमेरिका सहित कई संपन्न देशों में जाकर बसी है।

भारतवंशियों और प्रवासी भारतीय की इस जनसंख्या को भारत द्वारा लंबे समय से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी शक्ति के रुप से इस्तेमाल किया जाता रहा है। प्रवासी भारतीय विश्वभर में भारतीय धर्म, संस्कृति और भाषा के दूत के साथ साथ भारतीयता के भी दूत रहे हैं। ये जहां भी हों अपनी पूर्वजों की भूमि

को अपनी भूमि और अपने पूर्वजों के देश को आज भी अपना देश मानते हैं। भारत में घटित होने वाली हर छोटी बड़ी घटना से ये जुड़ते हैं। हिंदी सिनेमा के गीत आज भी इनकी धड़कनों में बसते हैं। हिंदी सिनेमा और धारावाहिकों के किरदार कलाकार आज भी इनके नायक हैं। भारतवासियों की तरह आज भी ये भारतीय सिनेमाई नायकों का अनुसरण करते दिखते हैं। ये अनेक सामाजिक और पारिवारिक धारावाहिकों में खासी रुचि लेते देखे जाते हैं।

लेकिन भारत के प्रति इनके मन में एक कसक हमेशा से देखी जाती है। जब मैं दक्षिण अफ्रीका गया तो मैंने भी इसे अनुभव किया कि ये भारत को अपने दिल में बसाए बैठे हैं, लेकिन भारत में इनकी कोई पूछ नहीं है। यहाँ इन्हें कोई विशेष सुविधाएँ भी नहीं हैं। दक्षिण अफ्रीका के भारतवंशी लोगों ने अपने दिल की यह बात कई बार जाहिर भी की। मैं समझता हूँ कि अपनत्व की भावना के चलते ही भारत सरकार द्वारा 2003 से प्रतिवर्ष 9 जनवरी से प्रवासी भारतीय दिवस मनाया जाने लगा। इसी दिन महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से स्वदेश वापस आए थे। इस दिवस को मनाने की शुरुवात सन 2003 से हुई थी। प्रवासी भारतीय दिवस मनाने की संकल्पना संविधान विशेषज्ञ व राजनेता स्वर्गीय लक्ष्मीमल सिंघवी के दिमाग की उपज थी। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी ने प्रवासी भारतीयों की शक्ति और भारतीय भाषा-संस्कृति और भारत भक्ति की भावनाओं को और उनकी शक्ति को समझा और उन्हें वे तमाम सुविधाएँ देने की पहल की, जिनकी उन्हें अपेक्षा थी।

विश्वभर में बसे प्रवासी भारतीयों ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम के बल पर अपना एक खास मुकाम बनाया है। कभी गिरमिटिया मजदूर बन कर गए लोग भी अब संपन्न हैं। वे अपनी पूर्वजों के देश के लिए भी बहुत कुछ करने की इच्छा अपने मन में रखे हुए हैं। वहाँ के विकास कार्यों में निवेश कर भारत के विकास के सहभागी बनना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि वे जब भारत में आएँ तो उन्हें किसी तरह की परेशानी न हो, वे वीजा आदि के झंझट से बच सकें। यही नहीं उनके मन में यहाँ के तीर्थ स्थलों के प्रति भी एक बड़ा आकर्षण होता है। जब यह सम्मेलन गंगा किनारे बसे ऐतिहासिक शहर में हुआ तो इसकी छटा ही कुछ थी। इससे विश्व में बसे करोड़ों प्रवासी भारतीय व भारतवंशी एक सूत्र में तो बंधते ही हैं और भारतीयता एक बड़ी विश्व शक्ति के रूप में उभरती है। इसके चलते भारत की आर्थिक प्रगति में भी महत्वपूर्ण मदद मिलती है। भारत की आर्थिक प्रगति में प्रवासी भारतीय के योगदान को निम्नलिखित रूप में समझा जा सकता है।

पहला है पर्यटन उद्योग का विकास। भारतीय धर्म - संस्कृति और जन्मभूमि से लगाव के चलते जब प्रवासी भारतवासी भारत आते हैं तो यहाँ के धार्मिक स्थलों, ऐतिहासिक स्थलों सहित विभिन्न पर्यटन स्थलों पर भी जाते हैं। विदेशों में गुजरात से जा कर बसे प्रवासी भारतीयों की बड़ी संख्या हैं जो बहुत ही संपन्न भी हैं। नरेंद्र मोदी ने गुजरात में अपने मुख्यमंत्री काल में इन्हें अपनी माटी से जोड़े रखने के लिए कई उपाय किए जिनमें रणोत्सव, पतंगोत्सव आदि उल्लेखनीय हैं, जिनमें बड़ी संख्या में प्रवासी हर वर्ष भारत आते हैं। हाल ही में गुजरात में स्थापित सरदार वल्लभ भाई पटेल की विश्व की सबसे बड़ी प्रतिमा को देखने के लिए भारतवासियों के साथ-साथ अप्रवासी भारतीयों की भी खासी भीड़ उमड़ रही हैं। कुंभ के मेले में भी अप्रवासी

भारतीयों की अच्छी खासी तादाद होती है। इनके लिए यहाँ बहुत अच्छी सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गई हैं। जब अप्रवासी भारतीय पर्यटन के लिए आते हैं तो अच्छे होटलों में रुकते हैं, खरीददारी करते हैं, आमोद-प्रमोद में खर्च करते हैं। इस प्रकार भारत में बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा की आवक होती है और पर्यटन उद्योग की अच्छी खासी आय होती है। होटल उद्योग हो, टूर- ट्रेवल्स उद्योग हो या पर्यटन से जुड़े अनेक उद्योग-धंधे, ये सभी प्रवासी भारतीयों के भारत आगमन से लाभान्वित होते हैं और इससे भारत के सकल घरेलू उत्पाद में भी वृद्धि होती है।

ऐसे प्रवासी भारतीयों की भी कोई कमी नहीं जो भारत से अपने लगाव के चलते यहाँ के लोगों की मदद की जनकल्याण योजनाओं के लिए भरपूर दान देते हैं या धार्मिक आयोजन में सहयोग करते हैं। मैं कई ऐसे मित्रों को भी जानता हूं जो यहाँ आकर गरीब बेटियों की शादियाँ करवाते हैं, सामाजिक संस्थाओं को भी भारी चंदा देते हैं, जो गरीबों के लिए तरह तरह की योजनाएं चलाती हैं। स्कूल, कॉलेज, अस्पताल ही नहीं ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ जरुरत होती है अन्य सुविधाओं के लिए भी ये आर्थिक सहयोग देते हैं। इससे न केवल देश के विकास में मदद मिलती है बल्कि गरीबों की भी मदद होती है इस प्रकार अंततः भारत के आर्थिक विकास में मदद मिलती है।

ऐसे अप्रवासी भारतीय की भी बहुत बड़ी संख्या है जिनके परिजन आज भी भारत में हैं और वे स्वयं विदेश में बस चुके हैं। अपने माता-पिता, भाई-बहन एवं परिजनों के भरण-पोषण आदि के लिए भी प्रवासी भारतीय बहुत बड़े पैमाने पर धनराशि भारत में भेजते हैं। इसके कारण भी भारत में बहुत बड़ी पैमाने पर विदेशी मुद्रा भारत में आती है। खाड़ी के देशों में काम करने वाले लाखों भारतीय बड़े पैमाने पर पेट्रो-डॉलर भारत भेजते हैं। केरल राज्य से तो बहुत बड़ी आबादी खाड़ी देशों में काम करने के लिए गई है। कल तक अत्यधिक पिछड़े राज्य में गिने जाने वाला यह राज्य इसके चलते अब विकास की दौड़ में तेजी से आगे की तरफ बढ़ रहा है। उत्तर भारत के राज्यों से रोजगार के लिए यहाँ पहुंचने वालों की भी खासी संख्या है।

कुछ वर्ष पूर्व मैं गुजरात से सटे संघ शासित प्रदेश 'दीव' गया था। गोवा, दमण, दीव एवं दादर नगर हवेली स्वतंत्रता के बाद तक पुर्तगाली उपनिवेश थे। इसके कारण यहाँ के निवासियों को पुर्तगाल में और यूरोप में बसने के लिए विशेष सुविधाएं दी गई है। मुझे दीव की बैंक की एक बड़ी शाखा के सहायक महाप्रबंधक ने बताया कि उनकी शाखा में बहुत बड़ी राशि जमा है। सामान्यतः ऐसे छोटी सी जगह पर स्थित शाखा में इतनी बड़ी राशि जमा नहीं होती। उन्होंने बताया कि बड़ी संख्या में यहां के गांव के लोग यूरोप में बस गए हैं। और उनकी परिजन यहाँ पर है जिनमें बुजुर्गों की खासी संख्या है। ये प्रवासी भारतीय संपन्न यूरोपीय देशों में अच्छी कमाई करते हैं, और जब यहां आते हैं तो बहुत बड़ी राशि यहाँ जमा करते हैं। ऐसी ही स्थितियाँ देश के विभिन्न राज्यों में है। इस प्रकार प्रवासी भारतीयों के माध्यम से भारत की आर्थिक विकास में खासी मदद मिलती है।

वर्ल्ड बैंक की 2021 की एक रिपोर्ट में कहा गया कि भारत पहला देश होगा, जहाँ प्रवासी कार्मिक विदेश से 100 अरब डॉलर भेजेंगे। भारत को 2021 में विदेश में काम करने वाले कर्मचारियों की ओर से 89.4

अरब डॉलर मिले थे। वर्ल्ड बैंक के अनुसार वेतन में बढ़ोतरी, अमेरिका में मजबूत श्रम मार्केट के कारण भारत में यह प्रवाह बढ़ा है। भारत विदेश में काम करने वाले कर्मचारियों की ओर से आनेवाले धनप्रवाह के मामले में मैक्सिको, चीन और फिलीपींस से आगे है। रिपोर्ट के अनुसार उच्च कौशल वाले भारतीय प्रवासी अमेरिका, ब्रिटेन और सिंगापुर जैसे अमीर देशों में रह रहे हैं और वे भारत में अधिक धन भेज रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार मध्यम आय वाले देशों में 2022 में यह प्रवाह 5 प्रतिशत बढ़ा है और यह करीब 626 अरब डॉलर हो गया है।

भारत के सकल घरेलू उत्पाद में विदेश में काम करने वाले कर्मचारियों की ओर से भेजे गए धन की हिस्सेदारी करीब 3 प्रतिशत है. यह राजकोषीय अंतर कम करने के हिसाब से भी अहम होता है. इससे देश में विदेशी मुद्रा आती है, जो भारतीय रुपए को मजबूती प्रदान करती है। यही नहीं भारत से अपने लगाव के चलते अनेक धनी प्रवासी भारतीय कंपनियों में भी निवेश करते हैं। वाइब्रेंट गुजरात समिट सहित कई राज्य समय –समय पर निवेश के लिए ऐसे आयोजन करते हैं, जिनमें प्रवासी भारतीय बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। यूरोप के मुकाबले भारत में ब्याज दर अधिक होने के कारण भी प्रवासी भारत में निवेश के प्रति आकर्षित होते हैं। पिछले कुछ समय में जब से भारत सरकार ने प्रवासी भारतीयों को भारत से जोड़ने की पहल की है, भारत की अर्थव्यवस्था में प्रवासी भारतीयों का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष योगदान काफी बढ़ा है।

मैं समझता हूँ कि भारत जितना प्रवासी भारतीयों से जुड़ेगा, आर्थिक शक्ति के रूप में भी उतना ही आगे बढ़ेगा। अप्रवासी सम्मेलन के माध्यम से न केवल विश्वभर के भारतीयों की एकजुटता मजबूत होती है बल्कि आर्थिक विकास में भी मदद मिली है। यह भारत की विदेश नीति के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रवासी भारतीयें के मंच को यदि भारत में आर्थिक निवेश के मंच के साथ और अधिक मजबूती के साथ जोड़ा जाए तो निश्चय ही प्रवासी भारतीय भारत को विश्व की एक बड़ी आर्थिक शक्ति बनाने में और अधिक मदद कर सकते हैं।

डॉ. एम.एल. गुप्ता 'आदित्य'
पूर्व उपनिदेशक, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग।
निदेशक, वैश्विक हिंदी सम्मेलन, मुंबई

भारत कल, आज और कल

1947 में स्वतंत्रता मिलने के पश्चात भारत देश के सम्मुख मुख्य समस्याएं थी गरीबी, भुखमरी और बेरोजगारी । देश के प्रशासन की कमान संभाले हुए नेताओं के समक्ष इन प्रश्नों के साथ-साथ देश में सुशासन और विदेश नीति एक बहुत बड़ी चुनौती थी। भारत दुनिया के सबसे बड़े आयातकों में से एक था, क्योंकि ब्रिटिश राज में भारतीय उद्योग पूरी तरह से ठप हो चुके थे और औद्योगिक उत्पादन बहुत छोटे पैमाने पर हो रहा था। कुछ गिनी चुनी भारतीय कंपनियाँ अपने पैरों पर खड़ी थी। इन कंपनियों को मशीनरी और तकनीकी सहायता के लिए विदेशों पर निर्भर रहना पड़ता था। जहां अपनी बुनियादी जरूरतों की पूर्ति करना सबसे कठिन कार्य था, वहाँ चंद्रमा पर कदम रखना, अन्तरिक्ष में मानव निर्मित उपग्रह भेजना या परमाणु हथियारों का विकास भारत के लिए विलासिता ही थी। 1998 में भारत परमाणु सम्पन्न राष्ट्रों की सूची में शुमार हो गया। किन्तु इसकी नीव हमारे दूरदर्शी प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के समय में ही रखी गई थी। उनकी और वैज्ञानिक होमी भाभा जी की अकाल मृत्यु ने भारत के परमाणु कार्यक्रम पर विराम लगा दिया। रही सही कसर चीन और पाकिस्तान के साथ 1962 और 1965 में हुए युद्धों ने पूरी कर दी, जिसके कारण हमारी अर्थव्यवस्था चरमरा गई और रुपये का वैश्विक बाजार में मुल्य प्रतिदिन नीचे गिरने लगा। पेट्रोल के व्यापार का प्रमुख माध्यम होने के कारण अमरीकी डालर एक वैश्विक मुद्रा के रूप में उभरकर सामने आया। आज़ादी के समय 1 अमरीकी डॉलर 4 भारतीय रुपए के बराबर था, जो आज़ादी की पचासवी सालगिरह आते-आते 45 भारतीय रुपयों तक गिर गया।

रुपए का अवमूल्यन निरंतर जारी है, फिर भी आज अमरीका, चीन, जर्मनी और जापान के बाद भारत दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। गत वर्ष हमने इंग्लैंड को पछाड़कर यह उपलब्धि प्राप्त की। बावजूद इसके आज भी विदेशी फिल्मों और साहित्य में भारत का चित्रण चिलम फूंकने वाले साधु - सपेरों का देश, सांप-बिच्छूओ से भरा हुआ अस्वच्छ देश के रूप में किया जाता है; जो बिलकुल भी सत्य नहीं है। पश्चिमी अर्थशास्त्री भारत को एक विकासशील अर्थव्यवस्था बताते हुए अपने अंतरिक्ष कार्यक्रमों से हटकर भारत में शिक्षा संस्थान, अस्पताल और औद्योगिक इकाइयां खड़ी करने की सलाह देने से नहीं चूकते। यहां तक कि हमारे ही देश के कुछ नागरिक भी उनकी हां में हां मिलाते हुए भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को पैसे की बर्बादी बताते हुए देश की आंतरिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने का सुझाव सोशल मीडिया पर अपने टिप्पणियों के माध्यम से देते रहते हैं। क्या आपको भी यह लगता है कि भारत को अंतरिक्ष कार्यक्रम से किनारा करते हुए शिक्षा वैद्यकीय और मूलभूत सुविधाओं के विकास पर वह पैसा खर्च करना चाहिए ? यदि आपका भी जवाब हां है तो मैं कुछ तथ्य आपके समक्ष रखना चाहूंगा जिससे शायद आपका विचार बदल सकता है।

भारत ने सर्वप्रथम अपना उपग्रह आर्यभट्ट आकाश में भेजी जिससे भारत में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र

में क्रांति आ गई। जो भारत देश दूरदर्शन प्रसारण जैसी साधारण सुविधाओं के लिए विदेशी सेवा दाताओं पर निर्भर था, वह उनके कंधे से कंधा मिलाकर खुद के उपग्रह के माध्यम से इंटरनेट और दूरदर्शन प्रसारण सेवा चलाने में सक्षम हो गया। भारत जनसंख्या में विश्व का सबसे बड़ा देश है इसलिए सभी देशों के लिए यह एक बड़ा बाजार है और इसके माध्यम से धन कमाने का अवसर कोई भी पश्चिमी देश नहीं खोना चाहता। चूंकि भारत सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में आत्मनिर्भर होने लगा है इससे उपग्रह के माध्यम से संचार सेवाएं प्रदान करने वाली विदेशी कंपनियों का आय का बहुत बड़ा साधन उनसे छिन गया है और इसी का दुख पश्चिमी विचारकों के साक्षात्कारों में व्यक्त किए गए विचारों से देखा जा सकता है। यही कारण है कि वे भारत को अंतरिक्ष कार्यक्रमों से ज्यादा शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं को मजबूत करने पर ध्यान देने की सलाह देते हैं।

किसी भी युद्ध में जो ऊंचाई पर बैठा है उसके पास अनुकूल स्थिति होती है। युद्धशास्त्र में कहा जाता है की "पहाड़ की चोटी पर बैठा एक अकेला सैनिक नीचे से चढ़कर आनेवाले सौ सैनिकों पर भारी पड़ता है। उसके पास गोला बारूद न हो तब भी वह केवल बड़े-बड़े पत्थर फेंककर संकरे रास्तों से आनेवाले सैनिकों के दांत खट्टे कर सकता है।" कारण साफ है, ऊपर से नीचे के प्रदेश की निगरानी आसान हो जाती है। नीचे होनेवाली जरा सी हलचल भी तुरंत पकड़ में आ जाती है। कारगिल युद्ध के समय पहाड़ की चोटी पर बैठकर गोलीबारी करनेवाले आतंकी और पड़ोसी देश के सैनिक हमारे लिए सिरदर्द बने थे। उनके स्थान का पता करने हेतु हमने एक शक्तिशाली पश्चिमी देश से कारगिल इलाके के उपग्रह द्वारा लिए गए चित्रों की मांग की, ताकि हमें अपनी योजना बनाने में आसानी हो। किन्तु उस देश ने मदद करने से साफ इन्कार कर दिया। चोटी 4857 पर स्थित सेना की चौकी पर कब्जा करने के अभियान में कैप्टन विक्रम बत्रा जैसे अनेक वीर सैनिकों को अपने सीने पर गोलियां झेलनी पड़ी, क्योंकि हमारे चोटी पर मौजूद दुश्मनों की संख्या, स्थिति, स्थान तथा उनके पास उपलब्ध हथियारों और गोला बारूद की कोई जानकारी नहीं थी। यदि उस वक्त हमारे पास कोई निगरानी उपग्रह होता तो हमारे कई सैनिकों के प्राण बच सकते थे। इसी घटना से सीख लेते हुए हमारे प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने रक्षा बजट के साथ-साथ अन्तरिक्ष कार्यक्रमों के लिए भी अधिक धन उपलब्ध कराया।

वैश्विक अन्तरिक्ष अर्थव्यवस्था का मूल्यांकन 2022 तक 546 बिलियन अमरीकी डॉलर्स था जो अगले पाँच सालों में 41% बढ़ने का अनुमान है। यह भारत देश के लिए एक बड़ा अवसर है। 2023 में विश्व की सबसे बड़ी अन्तरिक्ष संस्था नासा का वार्षिक बजट 25.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर्स का है वही भारत के इसरो का बजट 1.93 बिलियन अमेरिकी डॉलर्स का बनता है, जो नासा से 311% कम है। इसरो के तत्कालीन प्रमुख अन्तरिक्ष वैज्ञानिक डॉ सतीश धवन अपने वेतन के रूप में केवल 1 रुपया प्रतिमाह लेते थे। उन्होने अपने सहकर्मियों के समक्ष देशभक्ति और निष्ठा का विरला उदाहरण प्रस्तुत किया। उनका यह कदम इसरो में कम लागत में प्रभावी काम को अंजाम देने का प्रथम चरण था। अन्य देशों की अन्तरिक्ष संस्थाओं की तुलना में लागत कम होने के कारण बहुत सारे देश आज इसरो को अपने उपग्रह अन्तरिक्ष में

भेजने का अनुबंध प्रदान करते है। यही कारण है की आज भारत ने 19 अलग-अलग देशों के 177 उपग्रहों को बहुत कम लागत पर अन्तरिक्ष में यशस्वी रूप से प्रक्षेपित किया है । इससे भारत देश की तिजोरी में लगभग चार हजार करोड़ भारतीय रुपयों का राजस्व आया है। यानि यह कहना गलत नहीं होगा की दूसरे देशों के उपग्रह अन्तरिक्ष में भेजना हमारे देश के लिए एक बहुत बड़ा आय का साधन बन सकता है।

रूस चंद्रमा पर मिशन भेजनेवाला पहला देश है वही अमेरिका चंद्रमा पर किसी जीवित व्यक्ति को उतरनेवाला प्रथम देश है। भारत ने भी अबतक चंद्रमा पर 3 मिशन्स भेजे है। अब यह सवाल तो बनता है की आखिर चंद्रमा पर कदम रखकर कोई देश क्या हासिल कर लेगा ? चलिए इस सवाल के जवाब ढूँढने की कोशिश करते है। अन्तरिक्ष में चक्कर लगा रहे मानव निर्मित उपग्रहों का रखरखाव बहुत खर्चीला काम है। उल्कापिंड से टकराकर उनका अपने मार्ग से भटक जाना या नष्ट हो जाना एक बड़ी समस्या है। इसी के विपरीत चंद्रमा पर अपनी दूरबीन और कैमरे लगाकर पृथ्वी पर चल रही गतिविधियों पर नजर रखना आसान और कम खर्चीला है। चंद्रमा की मिट्टी में पानी और दुर्लभ खनिजों के होने का अनुमान लगाया जा रहा है। जिनमें लिथियम और चाँदी जैसे कीमती खनिज शमील है। लिथियम सोने से भी ज्यादा कीमती हो रहा है यह बात तो सब जानते है। इलैक्ट्रिक बैटरी और वाहन ही हमारा भविष्य है, और लिथियम के बिना यह नहीं बन सकते। यही लिथियम हमारी कंपनियों के लिए ऊर्जा के नए स्रोत खोल देगा।

यदि भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग या किसी अन्य कारण से पृथ्वी मनुष्य के रहने के योग्य नहीं रही तो मनुष्य चंद्रमा पर बस्ती बना सकता है। दुनिया की बड़ी आर्थिक शक्तियाँ अभी से इस बारे में योजना और अनुसंधान में जुट गई है। चंद्रमा पर एक दिन पृथ्वी के 14 दिन जितना बड़ा होता है। वहाँ रात भी 14 दिन जितनी बड़ी होगी, जिसमें तापमान -130 डिग्री तक नीचे गिर जाता है। दिन के वक्त भी तापमान बहुत ज्यादा ऊपर नीचे होता रहता है। इस कारण वहाँ मनुष्य के सुरक्षित रूप से रहने के लिए वहाँ के तापमान का अध्ययन करके वहाँ के मौसम के अनुकूल घर बनाने के लिए सूचना एकत्रित की जाएगी। यह बात भी महत्वपूर्ण है की चंद्रमा की सतह पर घर बनाने हेतु सामग्री हम पृथ्वी से नहीं ले जा सकते। अतः वहाँ उपलब्ध सामग्री से किफ़ायती और टिकाऊ इमारते बनाने के लिए अनुसंधान जरूरी है। केवल चंद्रमा पर बस्ती बसाना हमारा अंतिम लक्ष्य नहीं है, अपितु चंद्रमा हमारे भविष्य की अन्तरिक्ष अभियानों के लिए एक प्रमोचन केंद्र (Launch Station) भी बनेगा। मान लीजिए हमें पृथ्वी से मंगल पर अवकाश यान भेजना है। अवकाश यान में वजन का ध्यान रखना आवश्यक होता है। इसलिए हम बहुत ज्यादा ईंधन एक बार में भरकर यान को प्रक्षेपित नहीं कर सकते। उस यान को बीच में रुककर ईंधन भरने की सुविधा अथवा उसके रखरखाव से संबन्धित कार्य चंद्रमा पर बने अवकाश केंद्र में हो सकते है। आगे चलकर हमारे अवकाश अभियान सीधे चंद्रमा से भी प्रक्षेपित हो सकते है। इससे कई ग्रह आज जितने दूर है, भविष्य में हमसे उतने ही नजदीक होंगे।

चंद्रमा की सतह, वहाँ की मिट्टी, वातावरण और अन्य परिस्थितियों की जितनी अचूक जानकारी हमारे पास होगी उतना ही हमें भविष्य की योजनाएँ बनाने में आसानी होगी। यदि हमने पृथ्वी से चंद्रमा की

यात्रा का सबसे सुरक्षित, किफ़ायती और तेज माध्यम ढूंढ निकाला तो भविष्य में हम पूरी दुनिया के यात्रा व्यवस्थापक बन सकते है। चंद्रमा की सतह पर सबसे ज्यादा उपजाऊ, कूटनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जमीन हमारे पास होगी और जाहीर सी बात है की इससे हम बड़े पैमाने पर धन तो कमा ही लेंगे और साथ में वैश्विक राजनीति में भारत देश का स्थान ऊंचा होगा।

जय हिन्द

भूषण बालकृष्ण मुले
महापत्तन प्रशुल्क प्राधिकरण

प्रेमचंद और समाजवाद

प्रेमचंद का प्रथम उपन्यास 'असरारे मुआविद' बनारस के उर्दू साप्ताहिक 'अवाजे खल्क' में 1903 से 1905 तक छपा। इसमें पंडों और महंतों के ढकोसलों और दुष्कर्मों का पर्दाफास किया गया था।

प्रेमचंद के उपन्यास 'किसना' की प्रति उपलब्ध नहीं है और शायद 'गबन' उसी की लीक पर चलकर लिखा गया था। उनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' भी - 1907 में प्रकाशित हुई थी। यह कहानी 'अलिफ लैला' की किस्सों की तरह थी। जिसको नैतिकता का रंग दे दिया गया था। "सोजे वतन" यह देश भक्ति की भावना से पूर्ण पांच कहानियों का संग्रह था। यही वह कहानी संग्रह था जिस पर अँग्रेज सरकार की भृकुटियाँ तन गयी थी इस पर अंग्रेज जिलाधीश ने बुलाकर पुछा और बिगड़ कर बोलेः तुम्हारी कहानियों में सिडीशन भरा हुआ है। अपने भाग्य को बखानों कि अँग्रेजी अलमदारी में हो मुगलों का राज्य होता तो दोनों हाथ काट लिए जाते। तुम्हारी कहानी एकांगी है। तुमने अँग्रेजी सरकार की तौहीन की है। सरकार की ताकिद थी कि बिना इजाजत के कुछ न लिखो। नवाब राय की नकाब उतर चुकी थी उसी दिन से घनपत राय, उर्फ नवाव राय, प्रेमचंद बन गये।

प्रेमचन्द अपना पहला बड़ा उपन्यास 'सेवा सदन' या 'बजारे हुस्न' लिखने लगे। उसके बाद 'प्रेमाश्रम' का आधारभूत उपन्यास 'गोशए आफियत' लिखना शुरू किया जो 25 फरवरी 1920 को समाप्त हुआ तब प्रेमचंद पर बोल्शेविक क्रांति का नशा चढ़ने लगा था।

'प्रेमाश्रम' का 'बलराज' गाँव वालों को इस अचरज का ब्यौरा "तुम लोग तो ऐसी हँसी उड़ाते हो," मानो कास्तकार कुछ होता ही नहीं। वह जमींदार की बेगार ही भरने के लिए बनाया गया है, लेकिन मेरे पास जो पत्र आता है। उसमें लिखा है कि रूस देश में कास्तकारों का राज है वह जो चाहते हैं वहीं करते हैं।

"उनके मन में व्यवस्था के प्रति गहन विक्षोभ का भाव समाया हुआ था जो बरबस फूट पड़ा था स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए उनके मन में उत्ताल तरंगे उठा करती थी। पंडित बनारसी दास चतुर्वेदी को एक पत्र प्रेमचंद जी ने लिखा था कि मेरी आकांक्षा है कि हम स्वराज संग्राम में विजयी हो। धन या यश कमाने की मुझे लालसा नहीं खाने भर को मिल ही जाता है। मोटर और बंगले की हवस नहीं। हाँ यह जरूर चाहता हूँ कि दो चार उच्च कोटि की पुस्तकें लिखूं पर उसका उद्देश्य भी स्वराज ही है।"

शहरी क्षेत्रों के मध्यम वर्ग में जहाँ स्वतंत्रता और समानता के प्रति लालसा और उत्साह बढ़ता जा रहा था वहीं ग्रामीण किसानों पर जुल्मों सितम भी बढ़ रहे थे। किसान की दयनीय दशा ने प्रेमचंद के हृदय को छुआ वे स्वयं ग्रामीण संस्कृति के अंग थे। इसलिए गांवों की दुर्दशा का जितना सजीव वर्णन किया उससे ऐसा लगता है कि हम कोई कहानी या उपन्यास नहीं पढ़ रहे हैं वरन् स्वयं किसी गांव में बैठकर अपनी आँखों से एक-एक घटना देख रहे हैं।

जब होरी का बेटा विधवा झुनिया को घर ले आता है तो गाँव के चारों चौधरी उस पर जुर्माना लगाकर

उसका घर ही रहन रख लेते हैं। जबकि उनमें से खुद का किसी का दामन साफ नहीं है। पंडित दातादीन का बेटा मातादीन स्वयं सिलिया चमारिन को रखैल बनाए हुये है।

नोखे राम खूसट भोला की छबीली पत्नी नोहरी को सरेआम घर में रख लेता है और यही हाल पटेश्वरी और झींगुरी सिंह का भी है। परंतु इन पर कोई कायदा, कोई कानून, कोई नैतिकता लागू नहीं होती, होती है तो केवल गरीब किसान पर यहाँ "समरथ को नहीं दोष गुसाई" याद आता है।

होरी के खेत सूख रहे हैं उसका डौल इस साल बुवाई का नहीं। दातादीन सिर्फ बीज देकर फसल बुवाई करा देता है इसी से उसका आधा हिस्सा फसल में बन जायेगा। उपर से एहसान अलग। नीचता की पराकाष्ठा तो तब होती है जब निर्धनता के दुख से कातर होरी की फूल सी प्यारी मैना सी बातुनी बेटी लूथड़ी एक बुढ़े के हाथ बिकवा दी जाती है। इस दयनीय दशा का वर्णन बहुत ही मार्मिक शब्दों में किया गया है:-

"आज तीस साल तक जीवन से लड़ते रहने के बाद वह परास्त हुआ है कि मानो उसको नगर के द्वार पर खड़ा कर दिया गया है और जो आता है उसके मुँह पर थूक देता है। मानो चिल्ला-चिल्ला कर कह रहा हो भाइयों, मैं दया का पात्र हूँ, मैंने नहीं जाना पेट की लू कैसी होती है, माघ की वर्षा कैसी होती है। इस देह को चीर कर देखो इसमें कितना प्राण रह गया है। कितना जख्मों से चूर, कितना ठोकरों से कूचला हुआ। उससे पूछो कभी तूने विश्राम के दर्शन किए, कभी तू छांह में बैठा ? उस पर यह अपमान और वह अब भी जीता है, कायर, लोभी, अधम।"

"कायाकल्प" उपन्यास में धर्म निरपेक्षता का आदेश भी उभरा है उसकी पृष्ठ भूमि शायद कुछ समय पूर्व आगरा के साम्प्रदायकि दंगे थे :-

"ईश्वर ने सृष्टि की रचना ही क्यों की जहां इतना स्वार्थ द्वेष और अन्याय है ? क्या ऐसी पृथ्वी बन सकती थी जहाँ सभी मनुष्य सभी जातियां प्रेम और आनंद के साथ संसार में रहती ? यह कौन सा इंसाफ है कि कोई तो दुनियां के मजे उड़ाये। कोई धक्के खाये, एक जाति दूसरी का रक्त चूसे और मूँछो पर ताव दे, दूसरी कुचली जाए और दाने-दाने को तरसे ऐसा अन्याय मय संसार ईश्वर की सृष्टि नहीं हो सकती।"

नवम्बर 1925 नवम्बर 1926 तक प्रेमचंद का 'निर्मला' उपन्यास धारावाहिक रूप से चांद में छपा। 'गबन' का प्रकाशन 1931 में हुआ यह प्रेमचंद के उपन्यासों का स्वर्ण युग बताया गया है। 1932 में 'कर्मभूमि' निकला और इसके बाद 'गोदान' में मशगुल हो गये परंतु इसका प्रकाशन 1936 में हुआ बीमारी के दिनों में उन्होंने 'मंगलसूत्र' लिखना आरंभ किया। दुर्भाग्य हिन्दी साहित्य का कि ये उपन्यास वे पूरा न कर पाये और हमें अधर में छोड़कर अकाल कूच बोल दिया। यर्थाथवाद के क्षेत्र में अनेक चरित्रों की उन्होंने रचना की उनमें से 'गोदान' की 'धनिया' एक तेज तर्रार दबंग स्पष्टवादिनी और न्याय के लिए संर्घष करने वाली नारी है।

जब दरोगा इस बात के लिए होरी से रिश्वत ले रहा है कि गाय की हत्या के सिलसिले में हीरा के घर की तलाशी न ली जायेगी उस समय वह उसके इरादे को नाकाम कर देती है। यह चरित्र साहित्य मे प्रगतिवाद के अंकुर कहा जा सकता है। एक अवसर पर जब होरी किसान के बजाय दाता दीन का मजदूर बन कर रह जाता है और 'दातादीन' उसका शोषण कर-कर के 'होरी' का तेल निकालना चाहता है, तो

'धनिया' बीच में पड़ती है पर वह निर्दयी उसके साथ भी बड़ी रूखाई और अनादर का व्यवहार करता है, उसे भीख मांगने का दुर्वचन बोलता है तो वह दातादीन पर बरस पड़ती है और बबकार कर कहती है "भीख मांगो तुम जो भिखमंगे की जात हो हम तो मजदूर" हम जहां काम करेंगे वहीं चार पैसा पायेंगे।

नयी पीढ़ी ढकोसलों और आडम्बरों के प्रति क्या धारणा मन में बना रही थी उसका प्रतिविम्व प्रेमचंद ने इस समय प्रस्तुत किया जब गोदान का होरी अपने जमींदार राय साहब अमरपाल सिंह के पास से लौटकर आता है और गोबर तथा धनिया के सामने 'रायसाहब' के घड़ियाली आंसुओं की तारीफ के पुल बांधता है तो, 'गोबर' करारा व्यंग्य करते हुए जवाब देता है "तो फिर अपना धन हमें क्यों नहीं दे देते हम अपना खेत, बैल, कुदाल सब उन्हें देने को तैयार हैं करेगें बदला ? यह सब धूर्तता है, निरी मोटमरदी जिसे दुःख होता है वह दरजनों मोहरे नहीं रखता, महलों में नहीं रहता, हलवा, पूरी नहीं खाता और न नाच रंग में लिप्त रहता है मजे से राज का सुख भोग रहे हैं उस पर दुखी हैं।

"प्रेमचंद इस पाखंड की धज्जियां उड़ाते हुए आगे कहते हैं:- संवाद होरी और गोबर के बीच:-

गोबर- यह सब मन को समझाने की बाते हैं भगवान सबको बनाते है यहां जिसके हाथ में लाठी है वह गरीबों को कुचलकर बड़ा आदमी बन जाता है।"

होरी - 'यह तुम्हारा भरम ह' मालिक आज भी चार घंटे रोज भगवान की भजन करते हैं।

गोबर- किसके बल पर यह भजन भाव और दान धर्म होता है ?

होरी- अपने बल पर

गोबर- नहीं, किसानों के बल पर और मजदूरों के बल पर। यह पाप का धन पचे कैसे ? इसलिए दान धर्म करना पड़ता है। भगवान का भजन इसलिए होता है। भूखे नंगे रहकर भगवान का भजन करें तो हम भी देखे। हमें कोई दोनों जून खाने को दे तो हम आठो पहर भगवान की जाप ही करते रहे। एक दिन खेत में इख गोड़ना पड़े तो सारी भक्ति भूल जाय।

उनकी 'ठाकुर का कुआं' कहानी में 'गुंगी' का कथन 'हम क्यों नीच है और ये लोग क्यों ऊँचे हैं ? इसलिए कि ये लोग गले में तागा डाल लेते हैं ? यहां तो जितने हैं एक से एक छँटे हैं। चोरीये करे, जाल फरेब ये करें, झूठे मुकदमें ये करें। अभी इस ठाकुर ने तो उस दिन बेचारे गड़रिये की एक भेड़ चुरा ली थी और बाद को मार कर खा गया। इन्हीं पंडित के घर में तो बारहों मास जुआ होता है। यही साहू जी तो घी में तेल मिलाकर बेचते हैं। काम करा लेते हैं, मजदूरी देते नानी मरती है। किस किस बात से हम से ऊँचे हैं ? हां, मुंह से हमसे ऊँचे हैं हम गली-गली चिल्लाते नहीं कि हम ऊँचे हैं, हम ऊँचे है। कभी गांव में आ जाती हूँ तो इस रस भरी आंखों से देखने लगते हैं जैसे सबकी छाती पर सांप लोटने लगता है, परंतु घमंड कि हम ऊँचे हैं।

राष्ट्रवाद का उत्कट प्रमाण उनकी कहानी 'माँ' में मिलता है। 'करूणा' का पति देश भक्ति के लिए जेल भुगतकर आता है और संसार की दासता से मुक्त हो जाता है। अब उनकी एक मात्र आशा उसका पुत्र है। 'करूणा' उसे सत्ता भोगी नहीं राष्ट्र प्रेमी बनाना चाहती है। उसका कथन है- "मेरी इतनी बात मानो

सरकारी पदों पर न गिरो, मुझे यह मंजूर है कि तुम मोटा पहनकर देश की कुछ सेवा करो न कि इसके बदले तुम हाकिम बन जाओ और शान से जीवन बिताओ। और जब उसकी आशाएं पुरी नहीं होती, पुत्र सरकारी अधिकारी बन जाता है तो उसकी शक्ल से भी नफरत हो जाता है और आत्मग्लानि से प्राण त्याग देती है।

'कानूनी कुमार' नामक कहानी में तो प्रेमचंद ने परिवार नियोजन का जो सिद्धांत प्रतिपादित किया है वह आज की परिस्थितियों में भी अक्षरशः सत्य है। कानूनी कुमार एक गर्भवती महिला को देखकर चिंतातुर होता है- "बेकारी का यह हाल कि आधी जनसंख्या मक्खियां मार रही है आमदनी का यह हाल कि भरपेट किसी को रोटियां नही मिलती बच्चों को दूध स्वप्न में भी नहीं मिलता और ये अंधे हैं कि बच्चे पर बच्चे पैदा करते जाते हैं।" संतान निग्रह बिल को जितनी जरूरत इस देश को है उतनी और किसी कानून की नहीं। दो बच्चों से ज्यादा जिसके हों उसे कम से कम पांच वर्ष की कैद उसमें पांच महीने से कम काल कोठरी न हो। जिसकी आमदनी सौ रूपये से कम हो उसे संतानोत्पति का अधिकार ही न हो.....हाँ एक दफा ये भी रहे कि एक संतान के बाद कम से कम सात वर्ष तक दूसरा न आ पाये। तब इस देश में सुख संतोष का साम्राज्य होगा तब स्त्रियों और बच्चों के मुख पर खून की सूर्खी नजर आयेगी तब मजबूत हाथ पांव और मजबूत दिल और जिगर के पुरूष उत्पन्न होंगे।

'दिल की रानी', 'बड़े घर की बटा', 'अलग्योझा', 'नमक का दारोगा', 'शतरंज के खिलाड़ी', 'दो बैल की कथा', 'पंच परमेश्वर', 'शंखनाद', 'बूढ़ी काकी', 'ईदगाह' अन्य कहानी है।

उन्होंने इन पारिवारिक और सामाजिक कहानियों में मानव हृदय के जटिल गूढ़ रहस्यों को जिस सहजता, सरलता और रोचकता से चित्रित किया है वह विश्व साहित्य के इतिहास में सदा मणि माणिक के सामान देदीप्यमान रहेगा।

वीरेन्द्र कुमार यादव
153 एम. आई. जी, लोहियानगर
कंकड़बाग, पटना-800020

डॉ. भगवतीचरण वर्मा के 'अपने खिलौने'

देखो, सोचो, समझो, सुनो, गुनो और जानो
इसको, उसको, सम्भव हो निज को पहचानो
लेकिन अपना चेहरा जैसा है रहने दो,
जीवन की धारा में अपने को बहने दो
तुम जो कुछ हो वही रहोगे, मेरी मानो।

भगवतीचरण वर्मा की याद जब भी आती है तब यह कविता याद आ जाती है। मेरा दिमाग इस लाइन में अटक जाता है और आगे जाने में घंटों लग जाते हैं, **'संभव हो निज को पहचानो'** असल में निज को पहचानना आसान काम नहीं है। इसे पहचानने में कई साधु एवं मुनि लोगों ने अपना सारा जीवन गंवाया है। कवि ने चुनौती भी दी है कि **संभव हो तो पहचानो** अगर कोई निज को पहचानने में कामयाबी हो जाता है तो वह ईश्वर तुल्य बन जाता है।

30 अगस्त 1903 को उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के सफीपुर में जन्मे भगवतीचरण वर्मा अपने उपन्यास, कहानियां, कविताएं और निबंध जैसे सृजनात्मक कार्यों के चलते साहित्य में अमर हो गए। सन् 1934 में प्रकाशित **चित्रलेखा** उपन्यास वर्मा जी की सर्वाधिक सफल औपन्यासिक रचना है। इस उपन्यास पर फिल्म का निर्माण हुआ और खूब सराहना मिली। यह एक समस्यामूलक उपन्यास है। पाप-पुण्य की समस्या का निजी व मौलिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास इसमें किया गया है। इन्होंने उस समय प्रचलित 'प्रताप' नामक समाचार पत्र का सम्पादक भी रहे। वे लंबे अरसे तक रेडियो के कार्य संचालक पद का पदभार भी संभाले। 1961 में साहित्यिक साधना के लिए भगवती बाबू को साहित्य अकादमी पुरस्कार से विभूषित किया गया। 1969 में इन्हें वाचस्पति उपाधि से विभूषित किया गया। आज मैं उनके **'अपने खिलौने'** के बारे में कुछ विचार प्रकट करना चाहता हूँ।

नर-नारी एक दूसरे से इसलिए झगड़ा करते हैं कि एक दूसरे पर पूरा का पूरा अधिकार जताना चाहते हैं। अपने काबू में रखने की चाहत के कारण दोनों में गलतफ़हमी होती है। दोनों के मन में डर है कि कहीं छोडकर न चला जाए। नारी माँ होकर सहज रूप में अपने बच्चों पर काबू करती है। नारी के विभिन्न रूप हैं और प्रत्येक रूप में इस पुरुष प्रधान समाज में वह अपने को संभालने के लिए बहुत कोशिश करती है और लड़ती रहती है। आजकल यद्यपि वह पुरुष के समान ही हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रही है फिर भी प्राकृतिक एवं शारीरिक दुर्बलताओं के कारण उन्हें सदा अपने स्थान को बनाये रखने के लिए लड़ना पड़ रहा है। वैसे आजकल बीस प्रतिशत के पुरुष एक दूसरे को यानी पत्नी को प्रतियोगी न समझकर पूरक समझने लगे हैं।

नारी को पुराने जमाने में गृह कार्य ही होती थी। यह उपन्यास 1958 में लिखा गया था। उस ज़माने

में भी लडकियों को प्रायः पढ़ाया नहीं जाता। केवल धनाढ्य लड़कियों को ही स्कूल, कालेज भेजते थे। मीना को पढ़ने के लिए कालेज भेजते हैं। और जब वह एकाध शब्द भी बड़ों के विरुद्ध बोलती है तो तुरंत यही समझा जाता है कि पढ़ाई की वजह से ही ऐसा कर रही हैं। जब अशोक गुप्ता के बारे में मीना टिप्पणी करती है तो ज्ञानेश्वरी कैसे डाँटती है देख सकते हैं "मी --- ना! खबरदार, अब ऐसा न कहना । राम ! राम ! कितना बुरा समय आ गया है !! पढ़ाई-लिखाई का यही नतीजा ! जाओ कपडे बदल लो !" सामान्य रूप में व्यवहार करने पर भी पढ़े लिखे लड़कियों पर यह मुहर ज़रूर लगाया जाता है कि पढ़ाई के कारण ही ऐसे व्यवहार करती है।

नर - नारी का संबंध शब्दातीत है। नारी को खुश रखने से जिन्दगी हमेशा खुश रहेगी। कहा भी गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवी-देवता निवास करते हैं। अशोक मीना से प्यार करता है और नारियों पर बड़ा आदर का भाव रखता है। नारियों के प्रति विशेषतः मीना के प्रति उनका विचार देखने योग्य है।

नारी निसर्ग, उत्सर्ग,
उल्लास, उच्छवास,
तम में प्रकाश,
पीत कली कुलगंदे की.....

जब तक नारी के साथ अच्छा संबंध है तब तक तो नर उसकी प्रशंसा करता है और उससे बहुधा संतुष्ट होता है। जब लड़ाई होती है तभी गालियाँ देने से लेकर नीच दृष्टि से देखने तक का काम करता है।

उस जमाने में एक हद तक विवाह व्यापार रहा। लड़कीवाले उनकी भविष्य की चिंता में लेन-देन कर शादी करते थे। नारी की संख्या अधिक होने के कारण दहेज के नाम पर बिकती थी। पर इसी समाज में एक ज़माने में स्वयंवर के नाम पर लड़कियाँ स्वयं अपने पति को चुनने की अनुमति थी। रामप्रकाश जब अन्नपूर्णा से शादी करना चाहता था तब मीना खिल्ली उड़ाती है तो रामप्रकाश का तर्क व्यावहारिक है और स्त्री की स्थिति का परिचयदायक है। आजकल यद्यपि बहुत ही व्यवहारिक है फिर भी लेखक 1958 में विधवा विवाह, अपने से बड़ी स्त्री से विवाह करना आदि प्रगतिपरक विचारों को पाठक के सामने रखा और स्त्रियोचित सामाजिक अपेक्षाओं को तोड़कर आगे बढ़ना सिखाया।

समाज में यह भी विचार है कि नारी जिद्दी होती हैं, अपने विचारों को न बदलपाती हैं, कूप मण्डूक हैं आदि आदि। कैरा कला प्रेमी है तो उसके पति पीतम भी । पीतम उन पर मुग्ध है और पागल जैसे प्यार करता है। पर कैरा अनायास ही प्रताप की ओर उनमुख होती है और उसे प्यार करती है। जख्मी, पीतम से ही कैरा के बारे में बहुत सी बातें करता है। कैरा के पति पीतम कैरा से कहना चाहता है कि उसके जीवन प्रताप से शादी करके बरबाद हो जाएगा। लेकिन वह समझती नहीं। आगे कहता है - लेकिन वह ठहरी औरत जात, अपनी जिद पर अड़ी हुई है। जख्मी आगे बात करते हुए कहता है 'भला बताइये उस बदशक्ल और जिददी औरत से युवराज शादी करेंगे। कहते हैं कि शक्ल चुडैलों की मिजाज परियों का' यद्यपि उस कथन में सच्चाई थी फिर भी अपनी पत्नी को चुडैल सुनते हुए पीतम बहुत नाराज हो जाता है और गरदन पकड़कर जख्मी के

साथ जोरदार झगड़ा करता है। अत्याधुनिक विचार इसमें दर्शायी गयी है। केवल 2015 के बाद ही लिविंग टुगेथर की संकल्पना भारत में आयी है। पर 1958 में ही पति ही पत्नी के वास्ते एक और पुरुष के संसर्ग को स्वीकारना कल्पनातीत घटना है।

स्त्रियों की ईर्ष्या सहज माना जाता है। विशेषतः अपने पति या प्यारे के साथ कोई कुछ सकारात्मक भी बोल रही है तो नाराज़ हो जाती है और उस नारी से जलन करती है। जब प्रताप मीना के घर में आकर कैरा की समस्या को बता रहा था तब मीना की प्रतिक्रियाएँ नारी समस्या को अच्छी तरह प्रकट करती है। जब उन्होंने कैरा के बारे में बताया तब मीना कहती है- "मीना ने कुछ तीखे स्वर में कहा वह लंबी सी बेढंगी स्त्री, जिसके साथ आप कल आए थे और जो आपकी पार्टी में बराबर आपके साथ नाचती रही ?" उसकी आवाज़ के तीखेपन को न समझकर प्रताप आगे कहता जा रहा था। यहाँ तक उसने कहा कि कैरा उससे शादी करना चाहती है। मीना संभल नहीं पाती है और बेहोश होकर गिर जाती है । 1958 या अगली दशकों में भी नारी पति के विषय में तो बहुत ही स्वार्थी होती थी और अपने सिवा और किसी से उन्हें बात करते हुए भी न देखना चाहती थी।

प्रताप कैरा से बहुत परेशान थे। जख्मी और उसके पति कोमल को समझा बुझाकर उन दोनों को कैरा से बात करने के लिए भेजा था। कैरा से उन्होंने पूछा कि क्या वह उन दोनों से मिली। तब वह कहती है 'मिलने की कोशिश तो उन दोनों ने अवश्य की थी। लेकिन मिलना और बातचीत करना बेकार। मैं तो आपकी हो चुकी हूं। आपके सिवा मेरे लिए इस दुनिया में कोई नहीं है।' कभी कभार स्त्रियों का व्यवहारअपेक्षातीत है।

कैरा के माध्यम लेखक साफ संदेश देते हैं कि ठ जिन्दगी जिस तरह सामने आती है, उसे उसी तरह ले लिया जाए। मैं तो सिर्फ इतना जानती हूं और इसलिए मैंने कभी सोचने विचारने की आदत ही नहीं डालतीठ

भगवतीचरण वर्मा अपने उपन्यासों में जाने अनजाने पुस्तकालयों के प्रति, कला के प्रति अपना मनस्थिति प्रकट कर लिए हैं। इस उपन्यास में भी कहते हैं कला पर मारे यहां न जाने कितने ग्रंथ लिख गए हैं, न जाने कितने वर्गीकरण किए गए हैं। आप सब लोग शकल से शिक्षित व कला प्रेमी दिखते हैं। सरकार ने अनगिनत पुस्तकालय खोलकर आपको उन पुस्तकों के पढ़ने की सुविधा प्रदान की है। और आगे कहते हैं देश की उन्नति कला में ही है। हमारी सरकार का भविष्य में यह प्रयत्न होगा कि देश का पर निर्भर है। मानव सभ्यता का प्राणतत्व कला में है, केवल कला बच्चा-बच्चा कलाकार बन जाए।

वर्मा जी पाश्चात्य कला को प्रोत्साहित करने में और उनकी नवीन मान्यताओं को अपनाने और उस कला को पूर्वीय बनाने के पक्ष में हैं। इस उपन्यास के वीरेंद्र प्रताप की तारीफ़ करते हुए कहते हैं कि आप भारत में पाश्चात्य चित्रकला को सुंदर ढंग से पूर्वीय बना रहे हैं।

जूता को लेकर वर्मा जी ने एक पूरा अध्याय लिखा है। जूते पहनने के बारे में पाश्चात्य और भारतीयों की मनोदशा के बारे में सविस्तार लिखा है ।

डॉ. भगवतीचरण वर्मा कृत 'अपने खिलौने' कालातीत कृति हैं। प्रगतिशील विचारों से भरा पड़ा है।

इस कृति से भी वर्मा जी साबित हो चुके हैं कि लेखक सार्वकालिक है और सार्वभौमिक है। स्त्री समस्या इस उपन्यास का केवल एक पक्ष है। मेरी आशा है कि इस एक पक्ष को पढ़कर पाठक प्रेरित होंगे और पूरा उपन्यास पढ़ेंगे और रसास्वादन करेंगे।

संतोष कुमार शर्मा
उप प्रबंधक (प्रोटो./राजभाषा)
मुख्यालय

राष्ट्र के विकास में पर्यटन का महत्व

"हम एक ऐसी परंपरा से ताल्लुक रखते हैं जहां हम पूरे ब्रह्मांड को अपना परिवार मानते हैं ।" वैश्वीकरण राष्ट्रीयकरण की अभिव्यक्ति है दोनों के बीच कोई विरोधाभास नहीं है ।

पर्यटन, देशाटन, तीर्थाटन - इन तीन शब्दों के अर्थ में ही पर्यटन की अवधारणा अंतर्निहित है । प्रथम शब्द है-पर्यटन अर्थात ज्ञान-प्राप्ति के लिए यात्रा करना। दूसरा शब्द है- देशाटन अर्थात विदेशों में, मुख्यतः आर्थिक लाभ के लिए यात्रा करना और तीसरा प्रमुख शब्द है- तीर्थाटन अर्थात धार्मिक लाभ के लिए यात्रा करना।

भारत आस्था का देश है । कश्मीर की सुबह सोने सी कन्याकुमारी में चांद सी रात भारत दर्शन में दिखेंगे हर रंग जनसंख्या के दृष्टिकोण से भारत विश्व का दूसरा और क्षेत्रफल के दृष्टिकोण से विश्व का सातवां बड़ा देश है। यहाँ पर प्राचीन समय से ही सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व भौगोलिक इत्यादि आधारों पर विविधताएँ पाई जाती हैं। भारत में विविधता पर्यटन के संबंध में भी संभावनाओं को प्रस्तुत करती है। भारत में पर्याप्त ऐतिहासिक स्थल, भौगोलिक विविधताएँ, जलवायु भिन्नताएँ और प्राकृतिक उपहार उपलब्ध हैं। अतः भारत में पर्यटन के क्षेत्र में असीम संभावनाएं हैं। भारत के 28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों में अलग-अलग भाषा, बोलियां, संस्कृति और परंपराएं हैं। कोई राज्य बर्फ की चादर से ढका रहता है तो कुछ राज्य हरी भरी वादियों के बीच पहाड़ों में स्थित हैं। कुछ मैदानी क्षेत्र, जंगलों और रेतीले मैदानों से घिरे हैं तो कुछ झीलों और झरनों से समृद्ध हैं। ऐसे ही दक्षिण भारतीय राज्य समुद्र तटों पर बसे हैं। पहाड़ों से लेकर मैदानी और समुद्री तटों पर स्थित इस जगहों पर कई ऐसे पर्यटन स्थल हैं जो कि धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व रखते हैं।

भारत में पर्यटन योजना - भारत में पर्यटन योजना की शुरुआत आजादी के बाद हुई थी । भारत में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए सचेत और संगठित प्रयास 1945 में किए गए थे । इसके बाद भारत में व्यवस्थित पर्यटन का विकास हुआ।

राष्ट्रीय पर्यटन दिवस - इस साल पर्यटन दिवस 2024 का विषय 'सतत यात्राएं, असामयिक यादें (Sustainable Journeys, Timeless Memories) है। यह थीम जिम्मेदार और सचेत यात्रा की अवधारणा पर जोर देती है। पिछले साल राष्ट्रीय पर्यटन दिवस 2023 की थीम' ग्रामीण और सामुदायिक केंद्रित पर्यटन' और 2022 की थीम "आजादी का अमृत महोत्सव" थी। भारत में पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए हर साल 25 जनवरी को राष्ट्रीय पर्यटन दिवस मनाया जाता है ।

भारत में पर्यटन उद्योग का विकास - पर्यटन उद्योग के विकास के लिए पर्यटन नियोजन की आवश्यकता है। पर्यटन नियोजन पर्यटन विकास की प्रक्रिया है। पर्यटन योजना समस्या को सुलझाने और

निर्णय लेने में मदद करती है जो योजनाकार को वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करती है। पर्यटन क्षेत्र के लिए व्यापक आर्थिक नियोजन तकनीकों का उपयोग अपेक्षाकृत नया है। आय के स्रोत के रूप में पर्यटन का बढ़ता महत्त्व, रोज़गार सृजन, क्षेत्रीय विकास, विदेशी मुद्रा और कई देशों के लिए भुगतान संतुलन में प्रमुख कारक कई सरकारों के साथ-साथ आर्थिक विकास में रुचि रखने वाले अन्य लोगों का ध्यान आकर्षित कर रहा है। पर्यटन 20वीं सदी के सबसे बड़े वैश्विक उद्योग के रूप में उभरा है और 21वीं सदी में और भी तेजी से बढ़ने का अनुमान है।

पर्यटन नीति - पर्यटन क्षेत्र को मजबूत करती है और देश में रोज़गार सृजन, पर्यावरण उत्थान, दूरदराज के क्षेत्रों के विकास और महिलाओं एवं अन्य वंचित समूहों के विकास में उत्प्रेरक बनाने की दिशा में नई पहल की परिकल्पना करती है।

राष्ट्रीय पर्यटन नीति - नई पर्यटन नीति का उद्देश्य विदेशी पर्यटकों को प्रत्याशित लागत पर विश्वसनीय सेवाएं उपलब्ध कराकर उनके भारत प्रवास को स्मरणीय और सुखद बनाना भी है ताकि वे मित्र के रूप में बारबार भारत भ्रमण के लिए आएं। यह भारत के अतिथि देवो भव के परम्परागत दर्शन के अनुरूप भी होगा।

पर्यटन उद्योग - पर्यटन एक बहुत बड़ा उद्योग है। यह न केवल रोजगार पैदा करता है, बल्कि दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक विकास को भी बढ़ावा देता है। इसके कई फायदे हैं जैसे कि अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देना और गंतव्य को जगह देना। पर्यटन प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने में भी मदद करता है।

आवश्यक बुनियादी ढांचे के निर्माण में मदद - पर्यटन उद्योग का राजस्व सरकार को पुलों और रेल-लाइनों जैसे आवश्यक बुनियादी ढांचे के निर्माण में मदद करता है, जो उन क्षेत्रों के विकास को आगे बढ़ाता है। विदेशी मुद्रा आय ला सकता है। इसके अलावा, पर्यटन उद्योग स्थानीय पर्यटन स्थलों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा देने में भी मदद करता है जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होता है।

पर्यटन प्रणाली विकास - पर्यटन प्रणाली के पांच महत्वपूर्ण घटक आकर्षण, पहुंच, आवास, सुविधाएं और गतिविधियां हैं। क) आकर्षणः पर्यटन गतिविधि आकर्षण से शुरू होती है। किसी स्थान या गंतव्य पर कुछ आकर्षण होना चाहिए तभी लोग या पर्यटक उस क्षेत्र का दौरा करेंगे।

राष्ट्र के आर्थिक विकास में पर्यटन का योगदान - किसी देश में पर्यटकों की संख्या बढ़ाकर, पर्यटन क्षेत्र अन्य उद्योगों को भी बढ़ावा देता है। वैश्विक स्तर पर पर्यटन एक बड़ा उद्योग है। यह कई क्षेत्रों में रोजगार के अवसर सृजित करता है साथ ही अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ाने में मदद करता है। पर्यटन नये इंफ्रास्ट्रक्चर और मानव पूंजी में निवेश को बढ़ावा देने के अलावा प्रतिस्पर्धा में तेजी लाता है। यह परोक्ष तौर पर औद्योगिक विकास को बढ़ावा देकर रोज़गार सृजन के जरिये आमदनी को बढ़ाता है। इस तरह यह एक सकारात्मक आर्थिक प्रभाव पैदा करता है।

राष्ट्र के सामाजिक क्षेत्र में पर्यटन का योगदान - पर्यटन सामाजिक-आर्थिक क्षेत्रों में विकास करने के साथ-साथ एक देश से दूसरे देशों की सांस्कृ तिक मूल्यों की पहचान, रीति-रिवाजों, परम्पराओं,

सामाजिक-संस्कृति, आदि को समझने में सहयोग करता है । परिकल्पनाएँ अध्ययन क्षेत्र में पर्यटकों की संख्या बढ़ने से आर्थिक एवं सामाजिक जीवन स्तर में सुधार होता है । जब हम अपने देश से किसी दूसरे देश में पर्यटन के लिए जाते हैं या कोई अन्य देश से हमारे देश में पर्यटन के लिए आता है तो देशों के बीच परस्पर मैत्री संबंधों का विस्तार होता है और दोनों देशों की सांस्कृतिक राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक विकास की गति सुनिश्चित होती है।

अर्थव्यवस्था में पर्यटन का योगदान - भारत की प्राकृतिक सुंदरता को पहचानने और भारतीय अर्थव्यवस्था के लिये पर्यटन के महत्त्व के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये प्रत्येक वर्ष 25 जनवरी को राष्ट्रीय पर्यटन दिवस मनाया जाता है। राष्ट्रीय पर्यटन दिवस की थीम आम तौर पर भारत को पर्यटन के लिए एक आदर्श स्थान के रूप में बढ़ावा देने से संबंधित है। राष्ट्रीय पर्यटन दिवस लोगों को भारत की सुंदरता की सराहना करने और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करता है।

देश की ब्रांड वैल्यू, छवि और पहचान - विश्व की अतुल्य धरोहरो को संजोने वाला भारत देश पर्यटन की दृष्टि से अलग ही छवि रखता है। पर्यटन किसी देश की संपूर्ण वृद्धि और विकास में योगदान देता है: एक, कई आर्थिक मूल्य और लाभ लाकर; और, दूसरा, देश की ब्रांड वैल्यू, छवि और पहचान बनाने में मदद करना। पर्यटन उद्योग आकर्षक स्थलों से आगे बढ़कर एक महत्वपूर्ण आर्थिक विकास योगदानकर्ता बन गया है।

सेवा उद्योग को बढ़ावा - भारत यात्रा और पर्यटन के लिए एक बड़ा बाजार है। यह विशिष्ट पर्यटन उत्पादों का एक विविध पोर्टफोलियो प्रदान करता है - क्रूज, साहसिक, चिकित्सा, कल्याण, खेल, एमआईसीई, पर्यावरण-पर्यटन, फिल्म, ग्रामीण और धार्मिक पर्यटन। भारत को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों के लिए आध्यात्मिक पर्यटन के गंतव्य के रूप में मान्यता दी गई है। अर्थव्यवस्था में पर्यटन का योगदान - भारत में पर्यटन सबसे बड़ा सेवा उद्योग है, जहां इसका राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में 6.23% और भारत के कुल रोज़गार में 8.78% योगदान है।

सामाजिक विकास में पर्यटन का योगदान - पर्यटन का विकास विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है। जनसांख्यिकीय, पर्यावरणीय, भौगोलिक, सामाजिक-आर्थिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, राजनीतिक और कानूनी यात्रा मेलों और प्रदर्शनियों में भागीदारी-विदेशों में भारतीय पर्यटन कार्यालय देश के पर्यटन उत्पादों को प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिए दुनिया भर के महत्वपूर्ण पर्यटक उत्पादक बाजारों के साथ-साथ उभरते और संभावित बाजारों में प्रमुख अंतरराष्ट्रीय यात्रा मेलों और प्रदर्शनियों में भाग लेते हैं।

परिवहन विकास में पर्यटन का योगदान - परिवहन विकास में पर्यटन का खास महत्व है। परिवहन के मुख्य साधन हैं वायुयान, रेल और सड़क वाहन। ज्यादातर विदेशी पर्यटक हवाई यात्रा पसंद करते हैं, क्योंकि इससे गंतव्य स्थान तक पहुँचने में कम समय लगता है। भारत में इंडियन एयरवेज, एयर इंडिया तथा वायुदूत घरेलू पर्यटकों को हवाई यात्रा सुविधा उपलब्ध करते हैं। इसके अतिरिक्त हवाई यात्रा

सुविधा उपलब्ध कराने के लिये कुछ निजी एयरलाइन्स भी कार्यरत है, इनके चालक टूर बुकिंग कर्मचारी, टूर प्रबंधक, गाइड, टिकिट सहायक, वायुयान दल, एयर होस्टेस आदि पर्यटक की सुविधा के लिये उपलब्ध रहते हैं।

रेल घरेलू पर्यटन का एक खास अंग हैं। भारत की रेल व्यवस्था एशिया की सबसे बड़ी और विश्व की दूसरी सबसे बड़ी व्यवस्था मानी जाती है। रेलवे लगभग 30 लाख लोगों को नौकरी देती है । रेलवे पर्यटकों को आकर्षित करने' के लिये "अपनी पसंद से यात्रा करते है", "रियायती वापसी टिकिट" "समूह पर्यटन", "पहियों पर महल" आदि अनेक योजनाएँ चला रही है। रेलवे ने हाल ही में राजधानी और शताब्दी एक्सप्रेस जैसी लम्बी दूरी की तेज गति की गाड़ियाँ भी चलाई है जो अनेक नगरों को और महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्रों को जोड़ती है। सबसे आधुनिकतम वन्दे रेल शुरु की गई है जो आधुनिक से आधुनिक और आरामदायक और द्रूत गति से चलने वाली ट्रेन है। अभी कुछ कुछ वर्ष पूर्व से जम्मू कश्मीर में पर्यटन व्यवसाय की असीम संभावना दिखने लगी है। जब से जम्मू कश्मीर में आतंकवाद लगभग खत्म हो गया है तब से पर्यटन के लिए भारी संख्या में लोग जाने लगे हैं। सड़क परिवहन भी उद्योग का एक खास अंग है। विख्यात और बड़े होटल अकेले एवं समूह पर्यटकों के लिये सड़क परिवहन की सुविधायें उपलब्ध कराते हैं।

इस समय 250 अनुमोदित पर्यटक परिवहन संचालक है, जो पर्यटकों के प्रयोग के लिये अंतर्राष्ट्रीय स्तर की बसें और कोच उपलब्ध कराते हैं। शिवान पर्यटन निदेशालय ने अपने सर्वे में दावा किया है कि भारत में इस प्रकार के पर्यटन कार्यक्रम से पिछले एक साल मे विदेशी पर्यटकों के आगमन में 8 प्रतिशत से लेकर 24 प्रतिशत तक वृद्धि हुई हैं। पर्यावरण मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार चूँकि जंगल, समुद्र, पहाड़, नदी, बाग, बगीचे, जीव – जानवर, आदि पर्यावरण पर्यटन के प्रधान तत्व है। इसलिये सरकार इनके संरक्षण के सांस्कृतिक पर्यावरण पर्यटन शुरु कर चुकी है। कहा गया है कि पर्यावरण पर्यटन की क्षमताएँ बेहद व्यापक है, जिनकी ओर भारत सरकार का ध्यान गया है। पश्चिम और अमीर देशों के पर्यटक अपनी एक रूप और कृत्रिम संस्कृति "से ऊब गया है, इसलिये वह भारत की ओर नई तरह से आकर्षित किया जा रहा है। इसी प्रकार यदि योजनाओं को सही ढंग से लागू कर लिया गया तो निश्चित रूप से पर्यटन उद्योग के विकास को नई दिशा मिलेगी इसमें कोई शक नहीं।

राष्ट्रीय एकता और अंतर्राष्ट्रीय मेल-मिलाप को बढ़ावा - भारत में पर्यटन जहाँ एक ओर सामाजिक और आर्थिक लाभ का श्रोत है और राष्ट्रीय एकता और अंतर्राष्ट्रीय मेल-मिलाप को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर इससे संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में कई शानदार कैरियर के मौके भी उपलब्ध हैं। भारत में दसवीं योजना में घरेलू पर्यटन को खास रुप से सामाजिक और सांस्कृतिक समन्वय एवं राष्ट्रीय एकता के लक्ष्य को पूरा करने वाला बतलाया गया है। केन्द्र राज्य सरकारों और निजी उद्यमों द्वारा शुरु की गई अवकाश यात्रा रियायत योजनाओं जैसी कई योजनाओं से घरेलू पर्यटन को काफी बढ़ावा मिला। लेकिन महँगी आवास व्यवस्था रेलवे आरक्षण की कठिनाई और पर्यटक स्थलों के बारे में समुचित जानकारी न होने के कारण घरेलू पर्यटन में उपेक्षा के अनुसार वृद्धि नहीं हुई। भारत में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर

पर्यटन को बढ़ावा देने के काम में अनेक संस्थाएँ, एजेंसियाँ लगी हुई हैं।

इनमें से कुछ हैं – पर्यटन विभाग, भारतीय पर्यटन विकास निगम, भारतीय पर्यटन एवं यात्रा प्रबंधन संस्थान और होटल प्रबंध, कैटरिंग प्रौद्योगिकी परिषद। पर्यटन विभाग इन सबका केन्द्र बिंदु हैं। तथा देश में पर्यटन के लिये साधन सुविधायें विकसित करने के लिये मुख्यतः जिम्मेदार हैं। देश में इसके तीस पर्यटन कार्यालय हैं और देश के बाहर भी इसके कई कार्यालय हैं। 1966 में स्थापित भारतीय पर्यटन विकास निगम, पर्यटन के सृजन, विकास और विस्तार के लिये जिम्मेदार, है। आवास, भोजन, परिवहन, मनोरंजन, खरीदारी और विचार गोष्ठियों का आयोजन आदि की व्यवस्था करके यह पर्यटकों की अनेक प्रकार से सेवा करता है।

पर्यटन दुनिया में भारत का प्रतिनिधित्व - भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, विविध भूगोल और ऐतिहासिक स्थलों के लिए जाना जाता है, जो दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। इसके अतिरिक्त, भारत कई यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों, विदेशी वन्य जीवन और साहसिक पर्यटन के अवसरों का घर है।

"यही वह जगह है, जहां हर दिल को मिलता है आराम,
यहां दिखते हैं मथुरा के कृष्ण और अयोध्या के राम"

भारत में नई पर्यटन योजनाएं - प्रशाद, स्वदेश दर्शन, साथी, देखो अपना देश और निधि जैसी योजनाएं भी हैं, जो भारत सरकार द्वारा समर्थित हैं। निष्कर्षतः, यात्रा और पर्यटन उद्योग भारत की अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण योगदानकर्ता है, जो लाखों लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है।

भारत में पर्यटन का भविष्य - देश में एक प्रमुख वैश्विक पर्यटन स्थल बनने की क्षमता है, 2021 तक पर्यटन क्षेत्र में लगभग 3,414.8 बिलियन रुपये (77.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर) का योगदान होने की उम्मीद है। भारत वर्तमान में दुनिया के आकर्षक स्थलों की सूची में 12वें एशियाई प्रशांत क्षेत्र और कुल मिलाकर 68वें स्थान पर है । "देखो अपना देश" - यह अब भारतीय यात्रा उद्योग का गान है ।

अयोध्या और लक्षद्वीपः भारतीय यात्रियों की खोज के लिए दो नए रत्न - जैसे ही भारतीय 25 जनवरी, 2024 को राष्ट्रीय पर्यटन दिवस मनाते हैं, दो गंतव्य अन्वेषण के लिए रोमांचक संभावनाओं के रूप में उभरते हैंः अयोध्या और लक्षद्वीप। विरोधाभासी प्रतीत होते हुए भी, दोनों भारत की समृद्ध विरासत और आश्चर्यजनक सुंदरता से भरपूर अद्वितीय अनुभव प्रदान करते हैं।

पर्यटन क्षेत्र में भारत के लिए अवसर – दर्शनीय सुन्दरता : भारत महान पर्यटन क्षमता वाला देश है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक,अरुणाचल प्रदेश से गुजरात तक, प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशिष्टता और संस्कृति है, ये क्षेत्र अपने ठंड / गर्म रेगिस्तान (लद्दाख / राजस्थान), नदियों (गंगा और ब्रह्मपुत्र), वन (निलिगिरि और उत्तर पूर्व), द्वीपों (अंडमान और निकोबार) आदि प्राकृतिक विशेषताओं से पर्यटकों को

मंत्रमुग्ध करने की शक्ति रखते हैं. साथ ही यहाँ के परिदृश्य में व्यापक विविधता भारत और विदेश से आने वाले पर्यटकों के लिए कई विकल्प प्रदान करती हैं. प्राकृतिक परिदृश्य के अतिरिक्त पूरे देश में फैले सांस्कृतिक विरासत भी देश में पर्यटन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।

धर्मों की जन्मस्थली - भारत तीन धर्मों का जन्मस्थान है- हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म. विशाल परिदृश्य में असंख्य पवित्र और धार्मिक पर्यटन स्थल हैं जो दक्षिण पूर्व और पूर्वी एशियाई देशों के पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त हैं. पश्चिम में दिलवाड़ा जैन मंदिर की पूरी क्षमता, पूर्व और पूर्वोत्तर में बौद्ध स्थलों और दक्षिण में प्रसिद्ध हिंदू मंदिरों का अभी तक पूरी तरह से पता नहीं चल पाया है।

घरेलू पर्यटक - भारत 1.25 अरब आबादी के साथ दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। दूसरे शब्दों में वे यदि सही नीतियां और बुनियादी ढांचा मौजूद हो तो कम से कम 1.25 अरब पर्यटक यात्राओं का प्रस्ताव रख सकते हैं। नीति निर्माताओं को भविष्य के लिए सोचना चाहिए और घरेलू पर्यटन क्षमता को टैप करने के लिए उचित रणनीतियों के साथ आगे आना चाहिए । भारत द्वारा पर्यटकों को प्रदान किए जाने वाले उपरोक्त आकर्षण के बावजूद एक अच्छी तरह से विकसित पर्यटन प्रणाली के समक्ष कई चुनौतियाँ हैं। उनमें से कुछ हैं -

बुनियादी ढांचा का अभाव - यह भारतीय पर्यटन क्षेत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है । पर्यटन से जुड़ी आर्थिक और सामाजिक अवसंरचना,होटल, कनेक्टिविटी, मानव संसाधन, स्वच्छता, स्वास्थ्य सुविधाएं आदि काफी हद तक भारत में विकसित होने की अवस्था में हैं । बुनियादी ढांचे की खराब गुणवत्ता आईसीटी तत्परता घटक में भारत के 112 वें रैंक में और वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की यात्रा और पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मकता सूचकांक स्वास्थ्य और स्वच्छता घटकों में 104 वें रैंक से स्पष्ट परिलक्षित होती है।

सुरक्षा - पर्यटकों की सुरक्षा विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों की, पर्यटन विकास के मार्ग में एक प्रमुख बाधा है। विदेशी नागरिकों पर विशेष रूप से महिलाओं पर हमलों, दूरदराज के देशों के पर्यटकों के स्वागत के लिए भारत की क्षमता पर कुछ सवाल उठाते हैं ।

आम आदमी तक पहुँच - देश के अधिकांश पर्यटन स्थलों में गरीब, महिला और बुजुर्गों की पहुंच नहीं है. ऐसा यात्रा की उच्च लागत, खराब कनेक्टिविटी और विभिन्न कारणों के लिए आवश्यक अनुमतियों की एक श्रृंखला के कारण है । भारतीय दिव्यांग जो पूरी जनसंख्या के 2 प्रतिशत हैं, देश मंल कई पर्यटन स्थलों तक नहीं पहुंच सकते हैं।

निष्कर्ष - राष्ट्र के विकास में पर्यटन क्षेत्र प्राकृतिक संसाधनों, संस्कृति, विरासत आदि को बढ़ावा देने के लिए जिम्मेदार है जो प्रत्येक आगंतुक को गंतव्य का अनुभव करने में मदद करता है। पर्यटन विज्ञापन आगंतुकों को उस स्थान पर व्यक्तिगत रूप से जाने से पहले ही उससे परिचित होने में मदद करता है । पर्यटन राजस्व और विदेशी मुद्रा आय उत्पन्न करता है, व्यावसायिक गतिविधियों को उत्तेजित करता है, और आतिथ्य, परिवहन, हस्तशिल्प और सेवाओं जैसे विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करता है। पर्यटन को बढ़ावा देने से स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिल सकता है, बेरोजगारी कम हो सकती है और

जीवन स्तर में सुधार हो सकता है। पर्यटन देश की अर्थव्यवस्था के राजस्व में वृद्धि करता है, देश की बुनियादी ढांचों को विकसित करता है, हज़ारों नौकरियों के अवसर प्रदान करता है, विदेशियों और नागरिकों के बिच संस्कृतियों एवं भाषाओं का आदान-प्रदान करता है और भारत की नई पीढ़ियों को अपने इतिहास के बारे में बतलाता है।

"हर देश पर्यटन में ला चुके है हर तरह की क्रांति,
मगर भारत में ही मिलती है अध्यात्म और शांति"

आदित्य रमेश काकड़े
सहायक (लेखा)
मुख्यालय

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास शारीरिक शक्ति का नाम नहीं, अपितु आत्मिक शक्ति का नाम है। रूप से सुन्दर शरीर से शक्तिशाली लेकिन आत्मा से दुर्बल व्यक्ति कठिनाईयों की प्रथम बाढ़ में ही बह जाते हैं। शरीर से कमजोर, पर आत्मा से प्रबल व्यक्तियों को कठिनाईयों को चकनाचूर करते देखा गया है। संसार में सबसे कमजोर वे ही व्यक्ति होते हैं, जिन्हें अपने पर विश्वास नहीं होता।

हारा हुआ व्यक्ति वह नहीं होता जो अपने प्रयत्न में सफल नहीं होता। हारा हुआ व्यक्ति वह होता है जिसने आत्म विश्वास खो दिया है। मृत वह नहीं है जो मर गया है, मृत वह है जिसका आत्मविश्वास मर गया है। शक्ति के विश्वास में ही शक्ति है। अगर किसी को यही विश्वास नहीं कि वह मंजिल पर पहुँच सकता है तो वह चलेगा कैसे ? अगर किसी विद्यार्थी को यही विश्वास नहीं कि वह पास हो सकता है तो वह पढ़ेगा क्यो ?

आत्मविश्वास के क्षेत्र में शंका, सन्देह, असफलता, निराशा की कोई गुंजाइश नहीं होती। वहाँ ऐसी भावनाएँ तो मन में आनी ही नहीं चाहिए कि 'शायद मुझे सफलता न मिल', 'यह तो असम्भव हैं,' 'मैं पास होउँगा कि नहीं ? प्रत्येक व्यक्ति के भीतर शक्ति छिपी होती है, आवश्यकता होती है उसे उभारने की। प्रत्येक कुएँ में पानी होता है, पर पानी तो उसी कुएँ से निकलेगा जिसमें रस्सी लटका कर विश्वास के साथ खींचा जायेगा।

मनुष्य अपार शक्ति का स्त्रोत है। आवश्यकता होती है अपने को समझने की। अपने को समझना ही आत्मविश्वास है। स्वामी विवेकानन्द कहा करते थे, क्या तुम जानते हो कि तुम्हारे अन्दर कितना तेज और कितनी शक्ति छिपी है ? क्या वैज्ञानिक इन्हें जान सकता है ? मनुष्य का जन्म हुए लाखों वर्ष हो गए पर अभी तक उसकी असीम शक्ति का केवल अत्यन्त अल्प भाग ही अभिव्यक्त हुआ है।

जो लोग अपने प्रयत्न के प्रथम प्रयास में ही सफलता की आकांक्षा करते है, वे भारी भूल में रहते हैं। असफलता की प्रथम फिसलन पर सफलता के दरवाजे बन्द नहीं हो जाते। बच्चा खड़े होने के प्रयत्न में न जाने कितनी बार गिरता है और कितनी बार असफल होता है; लेकिन क्या वह एक दिन दौड़ने नहीं लग जाता ? यह विचार तो विश्वास का सौदा है। सच मानो यदि आत्मविश्वास व्यक्ति संसार में उत्पन्न न होता तो हम आज भी जंगली जीवन बिता रहे होते।

जिसमें आत्मविश्वास नहीं होता, उसमें अपनी शक्ति नहीं होती। जिसमें अपनी शक्ति नहीं होती, उसकी सहायता कौन कर सकता है ? चलने के लिए तो अपनी टांगों पर विश्वास करना पड़ता है। दूसरों की टांगों का सहारा लेकर आज तक किसने मंजिल पार की है अपनी ही टांगे मंजिल तक पहुँचाती है।

कोई भी व्यक्ति चाहे वह कितनी भी उम्र का क्यों न हो, यदि अपने को अभागा सोचने लगे और मानने लगे कि उसे सफलता मिल ही नहीं सकती, उसके पाव सदा विपरीत ही पड़ते हैं, उसके भाग्य में हार ही लिखी है तो समझ लेना चाहिए कि वह बूढ़ा हो गया है।

आत्मविश्वासी व्यक्ति में आत्म-निर्भरता, आत्म-सम्मान, असीम धैर्य, साहस आदि गुणों का

समावेश तो अपने आप ही जाता है। शूरवीर और कायर में एक ही शब्द का तो अन्तर है। शूरवीर में आत्म-विश्वास होता है और कायर आत्म-विश्वास खो चुकता है।

अतः मनुष्य में आत्म-विश्वास होना चाहिए और उसको विश्वास रखना चाहिए कि वह जो काम करेगा उसमें उसे सफलता अवश्य मिलेगी।

'आत्मविश्वास' तभी उत्पन्न हो सकता है, **जब मनुष्य को अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास हो और यह विश्वास बड़ों के प्रोत्साहन और प्रशंसा से ही आ सकता है।**

रवि शंकर
उप प्रबंधक
मुख्यालय

मज़दूर दिवस पर गीत

हम आपसे न आपका घर द्वार मांगेंगे
हाँ आपसे हम अपने अधिकार मांगेंगे ।
वह धूप की चुभन को
बच्चे हमारे सहते
टूटा हुआ छप्पर है
ना फिर भी कुछ हैं कहते

फूला फला न आपका संसार मांगेंगे
हां आपसे हम अपने अधिकार मांगेंगे ।

छाले पड़े हाथों में है पैर में बिवाई
कर्जे.से हूं लदा मैं बिटिया की है सगाई
माणिक और पन्ने के ना हम हार मांगेंगे
हां आपसे हम अपने अधिकार मांगेंगे ।

इमारतें बनाई महलों को भी बनाया
पर सर पे अपने बच्चों के नहीं छत का साया
रोटी मिले दो जून, ना फलाहार मांगेंगे
हां आपसे हम अपने अधिकार मांगेंगे ।

दिन-रात हम धरा पर मेहनत बिगुल बजाएँ
जब भी हो ज़रूरत तुम्हें
हम काम करते जाएं।
एक भी घड़ी की मुफ़्त ना पगार मांगेंगे
हां आपसे हम अपने अधिकार मांगेंगे ।

डॉ. राखी सिंह कटियार
कवयित्री
वडोदरा गुजरात

तनख़्वाह (सैलरी)

वो **(सैलरी)** आती है बड़ी नजाकत से
बेसबर सा इंतजार करवाके
न थोडा कम न बिलकुल ज्यादा
ऐसे शिद्दत से तैयार होके

सोचता हु की
इस बार वोह **(सैलरी)** आएगी तो
उसके साथ थोडा ज्यादा समय बिताऊंगा
सैकड़ों अरमान और हजारो ख्वाइशो को उसके साथ जी लूँगा
उसे दुनिया के नजरों से छुपाके रखूँगा किसी की बुरी नजर न उसपे पड़ने दूंगा

और हमेशा की तरह वोह आती भी है
बड़ी नजाकत से....
ढेर सारी ख़ुशिया और कुछ पलो का सुकून लेके
जब वो आती है तो मैं उसके प्यार में मशगूल हो जाता हूं
मुझे सलीम और उसे अनारकली समझने लगता हूं
लेकिन फिर कुछ समय में ही EMI-ए-किश्त नाम का अकबर आ जाता है
मेरे खूबसूरत अनारकली को कर्ज के खाते में (लोन एकांउट) में चुनवा देता है
बेचारी मेरी अनारकली आखरी सांसों तक मुझे ताकती रहती है
जाते जाते अगले महीने फिर आऊँगी ये वादा कर जाती है

और फिर किये हुए वादे को निभाने, वो अगले महीने फिर से आती है
बड़ी नजाकत से
बेसबर सा इंतजार करवाके
न थोडा कम न बिलकुल ज्यादा
ऐसे शिद्दत से तैयार होके
ऐसे शिद्दत से तैयार होके !!

पौर्णिमा वगल
अनुभाग अधिकारी
मुख्यालय

यादें

जिंदगी की भूली बिसरी चित्र है ... यादें
संग्रह है हमारे अतीत का
कुछ अच्छी तो कुछ बुरी होती हैं.... यादें
है अतीत का सार तो जिंदगी का महत्वपूर्ण भाग ।
भूल कर भी जिसे भुलाई न जाए
जिंदगी की भूली बिसरी चित्र है ... यादें । ।

होते हैं उदास और पाते हैं स्वयं को अकेले हम
चुपचाप धीरे से दस्तक दें जाती हैं .... यादें
बीते पल गुजरे हुए वो लम्हों की परछाई
याद बनकर याद आती हैं ।

हंसना, रोना, उदास होना भाग है जिंदगी का
जो कभी हमारे लबों पर मुस्कान ला देती है
तो कभी आंखों में नमी छोड़ जाती है ।

यादें होती है हमारी जिंदगी का एक महत्वपूर्ण भाग
जो आती और जाती रहती है
ये यादें ही तो है जो होती है हमारे अकेलेपन की साथी
कोई साथ हो या न हो
यादें हमेशा साथ निभाती है ।

रुचि सिंह
हिंदी अनुवादक
मुख्यालय

शब्द संसार

प्रशासनिक शब्दावली

क्र. सं.	अंग्रेजी	हिंदी
1.	Transformation	रुपांतरण
2.	Verification	सत्यापन
3.	Earned Leave	अर्जित छुट्टी
4.	Pay Scale	वेतनमान
5.	Point of view	दृष्टिकोण
6.	Preventive	निवारण
7.	Process	प्रक्रिया
8.	Resolution	संकल्प
9.	Condition	शर्त
10.	Wholly	पूर्णतया
11.	Modification	रुपांतरण / संशोधन
12.	Anticipation	पूर्वाभास
13.	Liaison Officer	संपर्क अधिकारी
14.	Lump Sum	एकमुश्त
15.	Non – Gazetted	अराजपत्रित
16.	Notice Board	सूचना पट्ट
17.	Authority	प्राधिकरण
18.	Appraisal	मूल्यांकन
19.	Functional	कार्यात्मक
20.	Impartial	निष्पक्ष

“ हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है ।’’



सेवानिवृत्ति



अक्टूबर से मार्च 2024 के दौरान निम्नलिखित अधिकारी एवं कर्मचारी निगम से सेवानिवृत्ति हुए, सीसीआई परिवार की ओर से उनके सुखद भावी जीवन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

	दिसंबर 2023	
1.	श्री महेंद्र चौहान, वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी, अहमदाबाद	31.12.2023
	जनवरी 2024	
2.	श्री मुनेश कुमार, अनुभाग अधिकारी, अहमदाबाद	31.01.2024
3.	श्री शंकर लाल गलगट, वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी, औरंगाबाद	31.01.2024
4.	श्री के जयचंद्र नायडू, अनुभाग अधिकारी, गुंटूर	31.01.2024
5.	श्री ममीदी आनंदन, अनुभाग अधिकारी, गुंटूर	31.01.2024
	फ़रवरी 2024	
6.	श्रीमती प्रियंका नाचने, सहायक प्रबंधक, मुख्यालय	29.02.2024
7.	श्री सूरजपाल वाल्मीकि, एम.टी.एस., मुख्यालय	29.02.2024
	मार्च 2024	
8.	श्री रामनिवास, वरिष्ठ वाणिज्यिक अधिकारी, सिरसा	31.03.2024
9.	श्री देव. कुमार, वरिष्ठ-वाणिज्यिक अधिकारी, अदिलाबाद	31.03.2024
10.	श्री एस. पी. पोद्दार, वरि. सहायक, रायगढ़ा	31.03.2024

राष्ट्रीय एकता तथा विश्व बंधुत्व का संदेश वाहक

राष्ट्रीय एकता के संदेशवाहक के रुप में भी बृहद विश्व सूक्ति कोष का अपना विशिष्ट महत्व है इसमें विशाल भारतवर्ष की संस्कृत, प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं तथा हिंदी, उर्दू, काश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, बंगला, उड़िया, असमिया, मणिपुरी, तामिल, तेलुगु, कन्नड़ और मलयालम सदृश आधुनिक भाषाओं में युग-युग के लोग नेताओं व साहित्यकारों द्वारा किस प्रकार एक ही संस्कृति तथा एक से विचारों की अभिव्यक्ति हुई है, यह अनुभूति पाठक को सहज ही होगी। राष्ट्रीयता का स्वर विश्व बंधुत्व का पुरस्कारकर्ता रहे, यह दृष्टि भी इस ग्रंथ में रही है, जैसे राष्ट्रीय स्तर पर उसमें संप्रदाय निरपेक्ष, वर्ग निरपेक्ष, प्रांत निरपेक्ष, भाषा निरपेक्ष, भाषा निरपेक्ष दृष्टि रही है, वैसे ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी उसमें किसी प्रकार पक्षपात या भेदभाव नहीं रखा गया है, यही नहीं, देश-देश के मनीषियों, संतो आदि द्वारा एक ही विषय पर विचार-साम्य है, भाव-साम्य हैं।

कोन कार जगतर, कोन कर मरमर
चकुर चिनाकि दुदिनर,
ससीमर रूप तृषा असीमत बुर याब
खहि गले जरी मरमर ।

जगत में कौन किसका प्यारा है ? सभी दो दिनों के परिचित है। ससीमकी रूप-तृष्णा प्यार का धागा टूटते ही असीम में विलीन हो जाएगी ।

(असमिया)

- नलिनीबाला देवी
(कवी श्री माला, पृ० 88)

इन लेयामेन्तनन्नीत्त्रील
इन्नि नालेयुमेन्तेन्मर्र विला
इन्निक्कंड तटिक्कु विनाशवुम्
इन्न नेरमेन्नेतुर्भारविला
कटु कक्कंड रिक्कुम् जनत्तिने
कंटिल्लेन्नु वरुत्तुन्नतुम् भगवान।
रंदु नालु निमकोंटोरुत्तेने
तं ठिलोटिट नटत्तुन्नतुम् भवान्
मालिकमुकलेरिय मन्नंटे
तोलिल माराप्पू केट्टुन्नतुम् भवान्।।

कल तक क्या हुआ और अब कल क्या होने वाला है, यह अभी मालूम नहीं। आज तो शरीर दिखाई पडता है, न जाने कब उसका नाश हो जाए। देखते-देखते हर रोज मिलते रहने वालों को सदा के लिए फिर नहीं मिलने वाले तुम्ही बना डालते हो। दोन-चार दिन में किसी को पालकी पर सवार तुम्हीं कराते हो। उसी प्रकार अटूटकालिकाओं पर विहार करनेवाले राजा को रंक बना देने वाले भी हे ईश्वर ! तुम्ही हो।

(मलयालम)

- पूंतानम् (ज्ञानप्पाना)

रोगों के आगार शरीर में किरायेदार के समान उपस्थित प्राण के लिए मानो अभी तक कोई शाश्वत स्थान ही प्राप्त नहीं हुआ !

- तिरुवल्लुवर (तिरुक्कुरल, 340)

Why, what is pomp, rule, regin, but
earth and dust?
And, live we how we can,
yet die we must.

शोभा, शासन, व राज्य, मिट्टी और धूल के अतिरिक्त क्या है ? और हम चाहे जैसे जीवित रहें, अन्त में मरना तो पडेगा ही।

- शेक्सपियर (हेनरी सिक्स्थ, भाग तृतीय 5/2)

We are such stuff
As dreams are made on; and our little
life Is rounded with a sleep.

नाम की गरिमा ही ऐसी है कि वह भावना विशेष का ही प्रतीक बन जाता है और वह भावना ही दिवंगत मानवों कि कई संततियों के पश्चात् भी जीवित रहती है।

- विनायक दामोदर सावरकर (हिन्दुत्व, पृ० 10)

नार्मन लोगों ने इंग्लैण्ड को जब जीता तब उन्होंगे इंग्लिश शब्द की भी ऐसी दुर्दशा की थी। यह गाली के रूप में नार्मन लोग परस्पर लेते देते थे। पर केवल इसलिए क्या अंग्रेजो ने स्वयं का नाम बदल दिया ? नहीं, अभिधान बदल कर कभी कोई पराक्रम वीर नहीं बनता। आगे फिर अंग्रेजों ने स्वयं के पराक्रम से त्रिखण्ड संसार जीत लिया और उसी इंग्लिश शब्द की धाक से बड़े-बड़े राष्ट्र भय से कांपते है और आज वह नार्मन शब्द नामशेष हो गया है।

- विनायक दामोदर सावरकर
(सावरकर विचारदर्शन, पृ० 163)

What's in a name? that which we call a rose by any other name would smell as sweet.

नाम में क्या रखा है ? गुलाब के पुष्प को किसी और नाम से पुकारने पर भी उसकी गंध तो उतनी ही मधुर होगी।

- शेक्सपीयर (212)

He said true things, but called them by wrong names.

उसने सत्य बातें कहीं किन्तु उन्हें गलत नाम दिए।

- राबर्ट ब्राउनिंग (बिशप ब्लोग्राम्स एपोलाजी)

Everybody has a right to pronounce
foregin names as he chooses.

हर मनुष्य को विदेशी नामों का उच्चारण इच्छानुसार करने का अधिकार है।

- विंस्टन चर्चिल

नाम-चिढ़ाने का नाम

A nickname is the heaviest stone
that the devil can throw at a man.

चिढ़ाने का नाम वह भारी से भारी पत्थर है जो शैतान किसी व्यक्ति पर फेंक सकता है।

- हैजलिट (स्केचिंग एंड ऐसेज)

Of all eloquence a nickname is the
most concise; of all arrangements the
most unanswerable

चिढ़ाने का नाम सभी भाषाओं में सबसे संक्षिप्त है और सब तर्को में सबसे अधिक अकाट्य है।

- हैजलिट (स्केचिंग एंड ऐसेज)

नाम रूप

उबो निस्साय गच्छन्ति, मनुस्सा णावा च अण्णवे एवं नामंच रूपंच, उभो ञत्रत्रोत्र निस्सिमता।

- विसुद्धमग्ग (18/36)

नारायण

एक प्रकार से नाम और रूप ही सृष्टि का पर्याय है, नाम सूत्र है, रूप विस्तार है। नाम प्रतीतियों की अविच्छिन्न श्रृंखला है, रूप प्रतीति का एक गृहीत क्षण। नाम सूक्ष्म है, रूप स्थूल।

- विद्यानिवास मिश्र
(परम्परा बंधन नहीं, पृ० 1)



सोहन लाल द्विवेदी

जन्म : 22 फरवरी, 1906

निधन : 1 मार्च, 1988

साहित्य काल : आधुनिक काल

रचनाएं : भैरवी, पूजागीत सेवाग्राम, प्रभाती, युगाधार, कुणाल, चेतना, बाँसुरी, तथा बच्चों के लिए दूधबतासा।

पुरस्कार : सन 1969 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया।

भा.क.नि.
CCI

भारतीय कपास निगम लिमिटेड

एक मिनी रत्न कंपनी
(भारत सरकार का उपक्रम)
कपास भवन, प्लॉट नं. 3 A सेक्टर 10,
सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई - 400 614, महाराष्ट्र, भारत
दूरभाष : 022-27579217 फैक्स : 022-27576030

सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार
उद्योग भवन, नई दिल्ली - 110 011
www.ministryoftextiles.gov.in

"राजभाषा रश्मि" छमाही पत्रिका का प्रकाशन ललित कुमार गुप्ता, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, भारतीय कपास निगम लिमिटेड, नवी मुंबई - 400 614